# सत्संग परायण - हिंदी काव्य

## 'सत्संग दीक्षा' पर आधारित

## (हिंदी भावार्थ सहित)

---

**ग्रंथकार मूल ग्रन्थ 'सत्संग दीक्षा'**
**परम पावन प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी जी महाराज**
**आध्यात्मिक गुरु एवं मार्ग दर्शक, बी ए पी एस स्वामीनारायण संस्था**

**हिंदी काव्यान्तरण**
**डॉ यतेंद्र शर्मा**

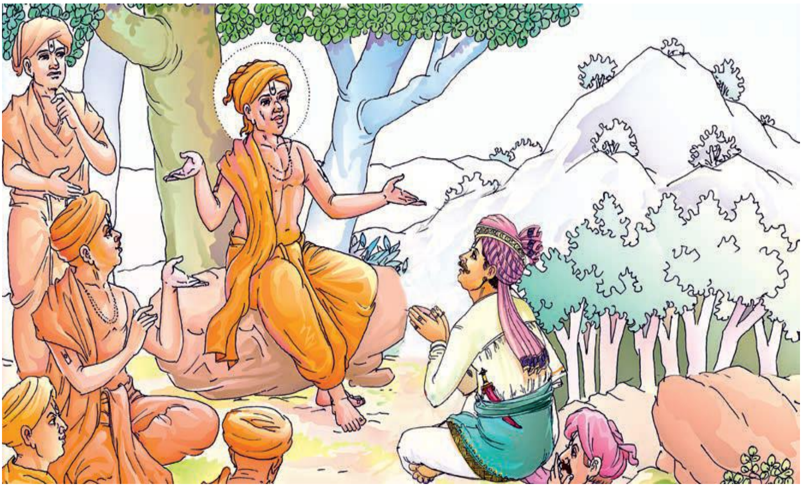

**श्री राम कथा संस्थान, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५**

# श्री राम कथा संस्थान उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- ब्रह्म मनोभाव: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- आत्मा मनोभाव: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- माया मनोभाव: माया प्रकृति के तीन गुण - सत, रज और तमस, के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करता है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करता रहता है।

# सत्संग परायण - हिंदी काव्य

## 'सत्संग दीक्षा' पर आधारित

## (हिंदी भावार्थ सहित)

---

## ग्रंथकार मूल ग्रन्थ 'सत्संग दीक्षा'

**परम पावन प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी महाराज**

**आध्यात्मिक गुरु एवं मार्ग दर्शक, बी ए पी एस स्वामीनारायण संस्था**

## हिंदी काव्यान्तरण

**डॉ यतेंद्र शर्मा**

## प्रकाशक

**श्री राम कथा संस्थान**
**३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़**
**ऑस्ट्रेलिया – ६०२५**

**Web https://shriramkatha.org**
**Email: srkperth@outlook.com**

# क्रमिका

समर्पण....................................................................................................5
आभार.......................................................................................................6
अनुराग......................................................................................................7
सन्देश - परम पावन साधु श्री परमचिन्तन दास जी महाराज..............................8
प्रार्थना.......................................................................................................9
सत्संग दीक्षा' ग्रन्थ महात्मय.....................................................................12
सत्संग परायण - हिंदी काव्य .....................................................................17
कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा.................................................................................83
सौजन्य .....................................................................................................85

# समर्पण

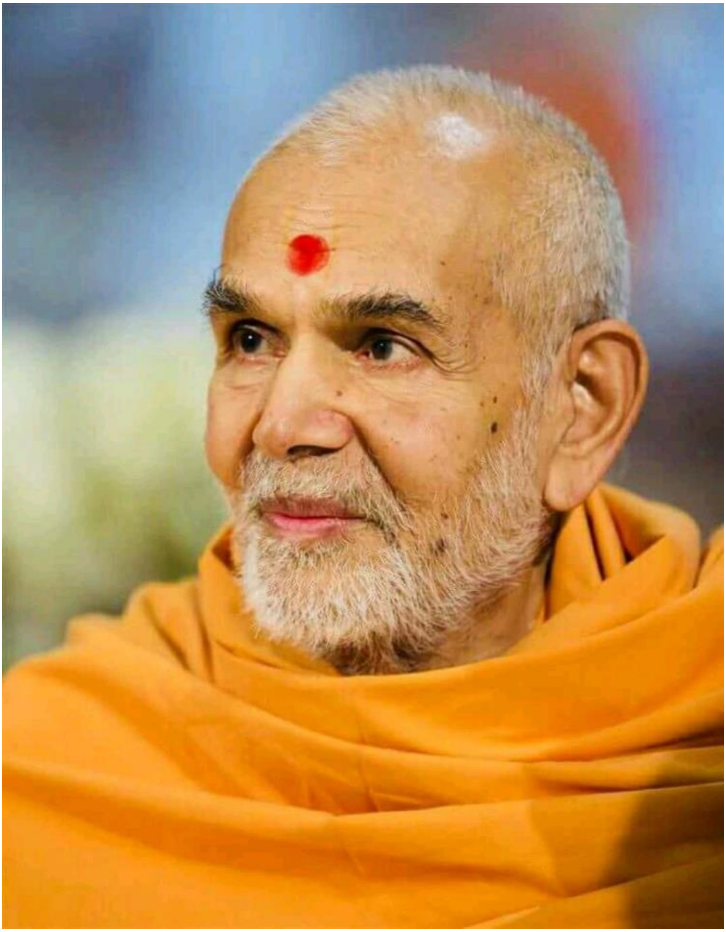

**परम पावन प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी जी महाराज**
**मूल ग्रन्थ 'सत्संग दीक्षा' के रचयिता**
**बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था**
**(बी ए पी एस) के आध्यात्मिक गुरु एवं मार्ग दर्शक**

# आभार

**परम पावन स्वामी डॉ महामहोपाध्याय वेदांत मार्तण्ड श्री भद्रेश दास जी महाराज, वरिष्ठ साधु, बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बी ए पी एस), अध्यक्ष, स्वामीनारायण अनुसंधान संस्था**

**महाविद्वान जिन्होंने परम पावन प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी जी महाराज द्वारा गुजराती भाषा में रचित मूल ग्रन्थ 'सत्संग दीक्षा' को संस्कृत में श्लोक बद्ध किया |**

# अनुराग

**परम पावन स्वामी श्री परमचिन्तन दास जी महाराज, वरिष्ठ साधु, बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बी ए पी एस), अध्यक्ष, स्वामीनारायण अनुसंधान संस्था, ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूज़ीलैण्ड**

# सन्देश - परम पावन साधु श्री परमचिन्तन दास जी महाराज

**परम पावन स्वामी श्री परमचिन्तन दास जी महाराज वरिष्ठ साधु, बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बी ए पी एस), अध्यक्ष, स्वामीनारायण संस्था, ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूज़ीलैण्ड**

## (हिंदी अनुवाद)

**जय स्वामीनारायण यतेंद्र भाई|**

**काव्य को हमारे साथ साझा करने के लिए धन्यवाद| यह अति उत्कृष्ट रचना है| आपको इसे पूर्ण करने में अवश्य ही अद्‌भुत प्रयास करने पड़े होंगे| हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आप इस प्रकार के महान कार्य करते रहें| श्री राम कथा संस्थान नूतन वर्ष में प्रगति करती रहे| आप सनातन धर्म के प्रसार के लिए अथक परिश्रम कर रहे हैं| आपके भविष्य के लिए मेरी शुभ कामनाएं हैं|**

**साधु परमचिन्तन दास**

**बी ए पी एस स्वामीनारायण संस्था, ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूज़ीलैण्ड**

# प्रार्थना

१७ सितम्बर २०२३ को बी ए पी एस स्वामीनारायण अनुसंधान के प्रथम वर्ष गांठ पर स्वामीनारायण संस्था की पर्थ शाखा ने एक विशाल जनसभा का आयोजन किया| परम पावन स्वामी श्री परमचिंतन दास जी महाराज, अध्यक्ष, बी ए पी एस स्वामीनारायण संस्था ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूज़ीलैंड, ने इस की अध्यक्षता की| माननीय भाई श्री डिलन वाडिआ एवं भाई श्री योगेश शाह जी के आमंत्रण पर मैंने भी इस जनसभा में भाग लिया एवं उनके निर्देशानुसार श्री रामचरितमानस पर दो शब्द भी बोले| इस जनसभा में परम पावन स्वामी श्री परमचिन्तन दास जी महाराज ने मेरी काव्य पुस्तिका, 'परम पावन श्री प्रमुख स्वामी जी महाराज मानस काव्य (भावार्थ सहित)' का विमोचन भी किया| यह काव्य पुस्तिका परम पावन स्वामी श्री प्रमुख जी महाराज के कुछ जीवन प्रसंगों पर आधारित है| इस सबके साथ जो अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, वह था परम पावन स्वामी परमचिन्तन जी महाराज द्वारा दिया गया 'सत्संग दीक्षा' पुस्तक पर व्यक्तव्य| यह पुस्तिका बी ए पी एस स्वामीनारायण संस्था के आध्यात्मिक गुरु एवं मार्ग दर्शक परम पावन प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी जी महाराज द्वारा जन कल्याण के लिए रचित एक महान ग्रन्थ है| यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सहस्त्रों वर्ष पूर्व चक्रवर्ती सम्राट भरत (जिनके नाम पर आर्यावर्त देश का नाम भारत पड़ा) के आध्यात्मिक गुरु एवं मार्ग प्रदर्शक महर्षि दीर्घतमस ने 'ईष्यावामनष्य' एवं अन्य ग्रंथों की रचना के माध्यम से सनातन धर्मीओं के लिए जो सामाजिक नियमों की व्यवस्था कर जीवन शैली देने का प्रयास किया, इस आज के युग (कलियुग) में इन महान संत स्वामी महंत जी महाराज ने इसी प्रकार का कार्य किया| इस प्रकार के ग्रन्थ की इस युग में पुनरावृत्ति होना आवश्यक था|

हम सब प्राणियों का भू जन्म लेने का एक ही लक्ष्य है, जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा पा प्रभु का धाम प्राप्त करना, अर्थात मोक्ष की प्राप्ति करना| बड़े भाग्य से, संभवतः कई जन्मों में सर्वोत्कृष्ट कर्म करने के बाद, न जाने ८४ लाख में से कौन कौन सी योनि में जन्म लेने के बाद हमें मनुष्य की योनि मिली है| इस जन्म को यूंही बर्बाद न करें| अपने लक्ष्य की ओर अग्रसित रहें| निःसंदेह हम लौकिक प्राणियों के लिए यह लक्ष्य पाना इतना सरल तो नहीं, लेकिन गुरु शिक्षा और

सत्संग से हम लक्ष्य प्राप्ति के निकट पहुंच सकते हैं, यही परम पावन स्वामी महंत जी ने इस ग्रन्थ में दर्शाया है|

सत्संग का महत्व अनगिनत संतों ने समय समय पर हमें समझाया है| गोस्वामी तुलसीदास जी राम चरित मानस में कहते हैं:

**बिनु सत्संग बिबेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥**

बिना सत्संग के बुद्धि में विवेक नहीं आता, और जब तक बुद्धि विवेकमय नहीं होती, जीवन का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता, यही परम पावन स्वामी महंत जी ने भी इस 'सत्संग दीक्षा' ग्रन्थ के माध्यम से दर्शाया है|

मैं स्वयं इस दीक्षा ग्रन्थ से इतना प्रभावित हुआ कि घर आकर मैंने इस ग्रन्थ को लगन से पढ़ना प्रारम्भ किया| इस ग्रन्थ को परम पावन प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी जी महाराज ने गुजराती भाषा में ३१५ पद्य द्वारा रचना की, जिसे परम पावन स्वामी डॉ महामहोपाध्याय वेदांत मार्तण्ड श्री भद्रेश दास जी महाराज, वरिष्ठ साधु, बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बी ए पी एस), अध्यक्ष, स्वामीनारायण अनुसंधान संस्था, ने संस्कृत के ३१५ श्लोकों में बद्ध किया| विश्व की अनगिनत भाषाओं में इस पावन ग्रन्थ का गद्य रूप में अनुवाद भी हुआ| लेकिन पावन धार्मिक ग्रंथों का पठन गायन पद्य में करने से जो आनंद की प्राप्ति होती है, और तरंगों द्वारा जो सीधा गुरु और भगवान् से संपर्क होता है, वह गद्य द्वारा नहीं| इसी लिए परम पावन प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्रीमहंतस्वामी जी महाराज ने गुजराती भाषा में एवं परम पावन स्वामी डॉ महामहोपाध्याय वेदांत मार्तण्ड श्री भद्रेश दास जी महाराज ने इसे संस्कृत पद्य में रचा| हिंदी में काव्य रूप में यह महान ग्रन्थ उपलब्ध नहीं था| विश्व में ५० करोड़ हिंदी वासी इस ग्रन्थ को पद्य रूप में पढ़ने से वंचित न रह जाएं, इसीलिए मैंने अथक प्रयास कर इस ग्रन्थ का हिंदी काव्यान्तरण करने का प्रयास किया| परम संत के शब्दों को मेरे जैसे सांसारिक पुरुष के लिए उसी प्रकार रचित करना और वही भाव देना जो महान संत ने दिया, संभव नहीं हो सकता| इसीलिए मैंने इस काव्यान्तरण को 'सत्संग परायण' नाम दिया| मैंने पूर्ण प्रयास किया है कि परम संत के शब्दों का भावार्थ दे सकूं, पर अगर कोई

त्रुटि हुई हो तो क्षमा प्रार्थी हूँ| परम पावन प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी जी महाराज एवं परम पावन स्वामी डॉ महामहोपाध्याय वेदांत मार्तण्ड श्री भद्रेश दास जी महाराज तो संत हैं, विशाल हृदय के हैं, इसलिए अवश्य ही क्षमा कर देंगे| मैं सभी अनुयायीओं से भी क्षमा प्रार्थना करता हूँ|

परम पावन प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी जी महाराज एवं परम पावन स्वामी डॉ महामहोपाध्याय वेदांत मार्तण्ड श्री भद्रेश दास जी महाराज द्वारा रचित ३१५ पद्यों को मैंने भी ३१५ चौपाइयों में रचना करने का प्रयास किया है| संभवतः ग्रन्थ की हिंदी काव्य रचना अधूरी रहती यदि मैं ग्रन्थ का महात्मय बताने में असमर्थ रहता, अतः अतिरिक्त २० चौपाइयों में मैंने इस ग्रन्थ का महात्मय बताने का प्रयास किया है| मुझे ऐसी पूर्ण आशा है कि आप मेरे इस प्रयास को अवश्य ही पसंद करेंगे|

प्रभु, गुरुदेव एवं संतो से करबद्ध नमन करते हुए, आपका अपना, प्रभु के चरणों में,

डॉ यतेंद्र शर्मा
अध्यक्ष

**श्री राम कथा संस्थान**

दिनांक: ७ दिसंबर २०२३
जन्मदिन परम पावन स्वामी श्री प्रमुख जी महाराज

# सत्संग दीक्षा' ग्रन्थ महात्मय

**महंत स्वामी परम पावन, सम्प्रदाय स्वामीनारायन |**
**बी ए पी एस पंथ सनातन, हैं आत्मिक गुरु प्रज्ञ महस्विन् || (१)**

*भावार्थ: सनातन धार्मिक संस्था बी ए पी एस स्वामीनारायण के आध्यात्मिक गुरु महाज्ञानी परम पावन स्वामी महंत (जी) हैं|*

**किए रचित महंत ग्रन्थ दिव्य, सत्संग दीक्षा शास्त्र पुन्य |**
**भाषा गुजराती रचयित्र्य, हैं त्रिशत पंचदश काव्य पद्य || (२)**

*भावार्थ: उन्होंने एक दिव्य ग्रन्थ, पावन शास्त्र 'सत्संग दीक्षा' की गुजराती भाषा में ३१५ पद द्वारा रचना की|*

**महामहोपाध्याय वेदांत, मार्तण्ड भद्रेश दास प्रज्ञांत |**
**किए अनुवादित पुस्तकांत, भाषा संस्कृत काव्य दिव्यांत || (३)**

*भावार्थ: महाज्ञानी संत महामहोपाध्याय वेदांत मार्तण्ड भद्रेश दास (जी) ने इस पुस्तक का सुन्दर संस्कृत भाषा में काव्य अनुवाद किया|*

**रचे यतेंद्र हिंदी अनुवाक्य, हो प्रसार ग्रन्थ हिंदी रंगमध्य |**
**धर्म ग्रन्थ यह सनातन सत्य, पठन श्रवण दे शान्ति हृदय || (४)**

*भावार्थ: यतेंद्र (डॉ यतेंद्र शर्मा) ने हिंदी क्षेत्र में पावन सनातन ग्रन्थ के प्रसार हेतु हिंदी काव्य में अनुवाद किया| इसका पठन और श्रवण हृदय को शान्ति देता है|*

**सम वेद वर्णित कर्म उपासन, दिए ज्ञान भूजन महामन |**
**पाएं लक्ष्य भू कर्मकरगन, की महंत रचना ग्रन्थ पोतन || (५)**

*भावार्थ: वेद में वर्णित कर्म, उपासना (इत्यादि) के ज्ञान के समान महामन (महंत जी) ने पृथ्वीवासियों को ज्ञान दिया| भूजन अपना लक्ष्य पाएं इस हेतु महंत (जी) ने इस पावन ग्रन्थ की रचना की|*

**है यह धर्म ग्रन्थ अति पावन, है करता उन्नत जन जीवन |**
**मिलेगा फल पठन और श्रवन, इहलोक प्रसन्न मोक्ष मरन || (६)**

*भावार्थ: यह धर्म ग्रन्थ अति पवित्र है जो प्राणियों के जीवन को उन्नत करता है| इसके पठन श्रवन का फल इस लोक में प्रसन्नता और मरण पर मोक्ष है|*

**है वर्णन सर्वोकृष्ट संस्कार, करे सृजन यह उच्च जनाचार |**
**लक्ष्य ग्रन्थ हो स्वप्न साकार, सुख शान्ति और स्वाधिकार || (७)**

*भावार्थ: इसमें सर्वगुण संपन्न संस्कारों का वर्णन है जो प्राणियों के व्यवहार को उच्च बनाता है| इस ग्रन्थ का लक्ष्य सुख, शान्ति एवं स्वतन्त्रता का स्वप्न साकार करना है|*

**जब रचे ग्रन्थ महंत पावन, रखे ध्यान वह हर जाति वर्न |**
**करे आयाम ग्रन्थ निरूपन, लक्ष्य उत्थान संस्कार भूजन || (८)**

भावार्थ: इस ग्रन्थ की रचना करने में पावन महंत (स्वामी जी) ने हर वर्ग और जाति का ध्यान रखा है| इस ग्रन्थ के विस्तार का लक्ष्य प्राणियों के संस्कारों का उत्थान करना है|

**किए संस्कार सूत्र प्रणयन, करे विकास मानव साधारन |**
**हेतु निर्माण राष्ट्र आचरन, है अहम् उच्च संस्कार भूजन || (९)**

*भावार्थ: संस्कार सूत्रों का (इस ग्रन्थ में) प्रणयन करें जिससे साधारण प्राणियों का विकास हो सके| राष्ट्र निर्माण के लिए प्राणियों में उच्च संस्कार का होना आवश्यक है|*

**करते संस्कार शुद्धीकरन, संभव तब हो लोक कन्त्वन |**
**हो इहलोक जीवन पावन, पा सकें परलोक निर्वाण जन || (१०)**

*भावार्थ: संस्कार शुद्धीकरण करते हैं जिससे लोक कल्याण संभव होता है| इस लोक में (जीवित अवस्था में) जीवन पवित्र होता है और परलोक में प्राणी मोक्ष पा सकते हैं|*

**कहें महंत हों फलित शुभ कर्म, करें आरोपित उच्च गुणवत्तम |**
**दें उच्च गुण संस्कार जीवम, हो तब कल्याण समस्त विश्वम || (११)**

*भावार्थ: (स्वामी) महंत जी कहते हैं कि शुभ कर्मों के फल स्वरुप उच्च गुण स्थापित होते हैं| यह उच्च गुण प्राणियों को संस्कार देते हैं जिससे समस्त विश्व का कल्याण होता है|*

**प्रकृति विरोधी तत्व संसारा, करें प्रभावित दुराधिकारा |**
**संस्कार सों पाएं छुटकारा, करें आकर्षित बल हितकारा || (१२)**

*भावार्थ: संसार में प्रकृति विरोधी तत्व हैं जो अपनी बुरी शक्तियों से प्रभावित करते हैं| संस्कार उनसे छुटकारा दिलाकर हितैषी शक्तियों की ओर आकर्षित करते हैं|*

**संस्कार करें जन अनुशासित, बन सके प्राणी अधिक संगठित |**
**करे यह दूर भावना कुंठित, हों जन जग सम इत्र सुगन्धित || (१३)**

*भावार्थ: संस्कार प्राणियों को अनुशासित करते हैं जिससे वह अधिक संगठित होते हैं| यह कुंठित भावना को भी दूर करते हैं| प्राणियों की संसार में इत्र के समान सुगन्धि फैलाता है (ऐश्वर्यता देता है)|*

**होती सुंदरता कुंड कमल से, हो शोभा सभा श्रोता से |**
**निखरे श्रृंगार नारि पति से, है शोभा प्राणी संस्कारों से || (१४)**

*भावार्थ: कुंड की सुंदरता कमल से होती है| सभा की शोभा श्रोताओं से होती है| नारी का श्रृंगार उसके पति से निखरता है| प्राणियों की शोभा संस्कारों से होती है|*

**संस्कारी नर पाता आदर, है संस्कारहीन सम पुष्प पत्र |**
**भौतिक शिक्षा भर सके उदर, नहीं पा सके लक्ष्य जीवन नर || (१५)**

*भावार्थ: संस्कारी पुरुष (नारी) आदर पाता है| संस्कारहीन (प्राणी) कागज़ के पुष्प समान है| भौतिक शिक्षा उदर तो भरती है, लेकिन प्राणी के जीवन लक्ष्य को नहीं दे सकती|*

**गुरु और जनयित्र दें संस्कार, कहें संत महंत हृदय उदार |**
**है सत्संग दीक्षा ग्रन्थ सार, मिले जन्म लक्ष्य द्वारा संस्कार || (१६)**

*भावार्थ: उदार हृदय के संत महंत (जी) कहते हैं कि गुरु और माता पिता संस्कार देते हैं| सत्संग दीक्षा ग्रन्थ का सार है कि संस्कार के द्वारा अपने जन्म (जीवन) का लक्ष्य प्राप्त करें (जन्म मरण आवागमन से छुटकारा पाएं)|*

**स्वाति नक्षत्र गिरे बूंद जल, बने कपूर यदि गिरे कदली दल |**
**बने मोती यदि गिरे शीप बिल, गिरे सर्प मुख तब बने हलाहल || (१७)**

*भावार्थ: स्वाति नक्षत्र में गिरी हुई जल की बूंद केले के पत्ते पर पड़ने से कपूर बन जाती है, शीप छिद्र में पड़ने से मोती बन जाती है, लेकिन सर्प के मुख में पड़ने से विष बन जाती है|*

**पड़े प्रभाव संगति जल लोलक, सादृश्य प्रभाव जन लौकिक |**
**सत्संग बनाए नर निष्कलंक, मिले शान्ति सुख हिय अलौकिक || (१८)**

*भावार्थ: जल की बूंद पर संगत का प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार सांसारिक पुरुषों पर भी (संगत का) प्रभाव पड़ता है| सत्संग प्राणियों को पवित्र बनाता है जिससे उन्हें हृदय में अपूर्व सुख शान्ति मिलती है|*

**दें शिक्षा संत महंत मान्यवर, महत्व महान सत्संग भद्रवर |**
**बने आदर्श मानव अनुसर, विधि विधान सत्संग हों अंदर || (१९)**

*भावार्थ: संत महंत (महाराज) सत्संग के महत्व की प्राणियों को शिक्षा देते हैं| जब सत्संग के नियम (हृदय के) अंदर हों, तो प्राणी आदर्श बनता है|*

**सत्संग दीक्षा ग्रन्थ महान, दे इहलोक अमन मरण निर्वान |**
**पढ़ो सुनो इसे लगा ध्यान, पाओ इस युग कृपा भगवान् || (२०)**

*भावार्थ: सत्संग दीक्षा महान ग्रन्थ है जो इहलोक में शान्ति और मरण पश्चात मोक्ष देता है| इसे ध्यान से सुनने और पढ़ने से इस युग (कलियुग) में प्रभु की कृपा प्राप्त होती है|*

# सत्संग परायण - हिंदी काव्य
# 'सत्संग दीक्षा' पर आधारित

**दें स्वामीनारायन शंसम, जो स्वयं अक्षर पुरुषोत्तम |**
**दें भगवान् जीवन शांतम्, चिन्मय मंगल आनंद परम || (१)**

*भावार्थ: भगवान् स्वामीनारायण जो स्वयं ही अक्षर पुरषोत्तम हैं, हमें मंगलमय, शांतिमय, आत्मिक एवं परमानंद पूर्ण जीवन का आशीष दें|*

**जीवन मनुष्य नहीं संजोग, करो त्याग भौतिक उपभोग |**
**करो न जीवन व्यर्थ भोग, लक्ष्य पा सकें लोक अमोग || (२)**

*भावार्थ: मानव जीवन अनायास नहीं मिला है| सांसारिक बंधनों को त्यागो| व्यर्थ में ही विषयी भोग में इसे व्यर्थ न करो| जीवन का उद्देश्य तो मोक्ष (प्रभु का धाम) प्राप्ति है |*

**दुर्लभ है पाना नर जीवन, मिल जाएगा मिट्टी में एक दिन |**
**मिले कौन योनि पुनरुज्जीवन, करता निर्भर कर्म प्रतिदिन || (३)**

*भावार्थ: मनुष्य जीवन पाना अति दुर्लभ है| यह तन एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा (नाशवान है)| पुनर्जन्म किस योनि में मिले, यह प्रतिदिन के कर्मों पर निर्भर करता है|*

**यह लोकायत कृत्य मनुज के, बस साधन आधार जीवन के |**
**केवल मार्ग भरण पोषण के, हैं नहीं अंतिम लक्ष्य मनुज के || (४)**

*भावार्थ: मनुष्य के सांसारिक कार्य तो केवल जीवन के आधार हेतु हैं| इनके माध्यम से (शरीर का) भरण पोषण होता है| यह मनुष्य का अंतिम लक्ष्य नहीं है |*

**करो दूर दुर्गुण इस तन के, हो अधिकारी ब्राह्मिक पद के |**
**करो तुम अर्पण भाव मन के, हृदय धर सत पग पद्म प्रभु के || (५)**

*भावार्थ: अपने शरीर से सभी अवगुणों को दूर कर ब्राह्मिक स्थिति के अधिकारी बनो| मन के भाव प्रभु को समर्पित कर उनके चरण कमलों को सदैव अपने हृदय में धारण करो|*

**होवे संभव यह संग संत गण, करें मुमुक्षु अभ्यास प्रतिक्षण |**
**हुए प्रगट श्री परब्रह्म देवगण, भगवान् स्वामीनारायण || (६)**

*भावार्थ: जब शिक्षार्थी संतों के सत्संग से हर समय (दुर्गुणों को दूर करने का) अभ्यास करते हैं, तब यह (जीवन का लक्ष्य प्राप्त करना) संभव है| परब्रह्मदेव भगवान् श्री स्वामीनारायण इसी हेतु (पृथ्वी पर) प्रगट हुए (अर्थात उन्होंने अवतार लिया)|*

**किए रचना श्री सत्संग दीक्षा, देती यह मुमुक्षु सत्संग शिक्षा |**
**दे संत सत्संग प्रेरणा मुमुक्षा, हों दूर दुर्गुन पा सकें मोक्षा || (७)**

*भावार्थ: इस 'सत्संग दीक्षा' ग्रन्थ का उद्देश्य यही है कि शिक्षार्थी सत्संग (के महत्व) की शिक्षा प्राप्त कर सकें| सत्संग से ही मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा होती है| सत्संग उनके अवगुणों को दूर कर उनको मोक्ष दिलाता है (मोक्ष प्राप्त करना ही मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य है)|*

**देता संत सत्संग ज्ञानात्मा, यह नित्य कहें महंत महात्मा |**
**जोड़ता सम्बन्ध परमात्मा, दे ज्ञान यह निर्मिथ्य प्रज्ञात्मा || (८)**

*भावार्थ: सत्संग से ही आत्म-ज्ञान का बोध होता है, ऐसा महात्मा महंत कहते हैं| यही (सत्संग) परमात्मा से सम्बन्ध कराता है, पवित्र बुद्धिमत्ता का ज्ञान देता है|*

**संत सत्संग से मिले गुरु कृपा, पाएं मनुज पाति अनुकम्पा |**
**दे संत सत्संग ज्ञान ग्रंथा, पा सकें आनंद मिले हरि कृपा || (९)**

*भावार्थ: सत्संग से ही गुरु कृपा एवं स्वामी की अनुकम्पा मिलती है| सत्संग से ही ग्रन्थ ज्ञान मिलता है, जिस से भगवान् की कृपा से आनंद की प्राप्ति होती है|*

**है देती दीक्षा निश्चल विश्वस, संकल्प श्रद्धा प्रतिबद्ध ब्रम्हस |**
**बढ़ाए यह भक्ति प्रति अनुस, हों शरणागति अटल शरवस || (१०)**

*भावार्थ: दीक्षा अटूट विश्वास, (उद्देश्य के प्रति) संकल्प, श्रद्धा एवं प्रभु के प्रति प्रतिबद्धता देती है| यही भगवान् (स्वामीनारायण) के प्रति भक्ति बढ़ाती है| प्रभु के शरणागति हों|*

**क्रिया आगना औ उपासना, वर्णित स्पष्ट ग्रन्थ सनातना |**
**परब्रह्म सहजानंद अव्यना, करें यह तथ्य प्रकट साधना || (११)**

*भावार्थ: परब्रह्म सहजानंद नारायण द्वारा प्रकट किए आगना एवं उपासना क्रिया की साधना के तथ्य सनातन ग्रंथों में स्पष्ट रूप से वर्णित हैं|*

**मनुष मानुषी समेत भूजन, हैं सत्संग अधिकारी सब गन |**
**पाएं सत्संग सों शांति अमन, हों ब्रह्मविद्या ज्ञान सम्पन्न || (१२)**

*भावार्थ: सभी पृथ्वीवासी (नर नारी) सत्संग के अधिकारी हैं| (सत्संग द्वारा) ब्रह्मविद्या ज्ञान से संपन्न होकर सुख शांति प्राप्त करें|*

**सत्संग से हो भाव समानता, हो नर नारी कोई लिंगता |**
**नहीं है महत्व श्रेष्ठ अवरता, दे मोक्ष पालक धार्मिकता || (१३)**

*भावार्थ: सत्संग में नर नारी कोई लिंग-भेद नहीं होता, समान भाव होता है| श्रेष्ठ अथवा गौण भावना का कोई महत्व नहीं होता| धर्म पालन करते हुए मोक्ष पा जाते हैं|*

**कोई भी हो वर्ण नर नारी, सब भूजन सत्संग अधिकारी |**
**हैं जो ब्रह्मविद्या अनुचारी, पा सकें मोक्ष जीवनधारी || (१४)**

*भावार्थ: सभी वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) के नर नारी सत्संग के अधिकारी हैं| ब्रह्मविद्या का अनुसरण कर सभी मोक्ष पा सकते हैं|*

**नहीं महत्व श्रेष्ठ निम्नता, आधार वर्ण जाति विवेकता |**
**करो सेवा त्याग दम्भता, मिले सत्संग से तुम्हें बुद्धिता || (१५)**

*भावार्थ: वर्ण, जाति, विवेकता (इत्यादि) के आधार पर श्रेष्ठता, निम्नता का कोई महत्व नहीं है| अहंकार को त्यागकर (सभी की) सेवा करो| सत्संग से बुद्धिमता की प्राप्ति होती है|*

**है न कोई श्रेष्ठ न कोई निम्न, आधार जन्म जाति या वर्न |**
**नहीं करो भेद धनी निर्धन, अभ्यास सत्संग पाएं प्रह्लन्न || (१६)**

*भावार्थ: जन्म जाति अथवा वर्ण के आधार पर कोई श्रेष्ठ अथवा निम्न नहीं हैं| धनी अथवा निर्धन में कोई भेद-भाव न करते हुए सत्संग का अभ्यास कर आनंद की प्राप्ति करो|*

**हो गृहस्थ अथवा साधु संत, अधिकारी मोक्ष सभी जीवंत |**
**नहीं कोई नीचा न उच्चंत, हैं सब भक्त नारायण अनंत || (१७)**

*भावार्थ: गृहस्थ हो अथवा साधु संत, सभी मोक्ष के अधिकारी हैं| इनमें कोई ऊंचा अथवा नीचा नहीं हैं| यह सभी अनंत नारायण के भक्त हैं|*

**धर हृदय स्वामीनारायण, करो दृढ़ उच्चतम समर्पण |**
**लो आश्रय दीक्षा मंत्रण, करो सत्संग तुम सभ्य जनगण || (१८)**

*भावार्थ: भगवान् स्वामीनारायण को हृदय में धारण कर (उनके प्रति) दृढ़ एवं उच्चतम समर्पण करो| आश्रय दीक्षा मन्त्र ग्रहण करो| सभ्य जनों का सत्संग करो|*

**समझो दीक्षा मन्त्र आशय, दें स्वामीनारायण आश्रय |**
**हो तुम धन्य निष्काम अतिसय, निष्पाप सुखी और निर्भय || (१९)**

*भावार्थ: दीक्षा मन्त्र का सार है, स्वामीनारायण आश्रय दें| (उनकी कृपा से) धन्य, पूर्णकाम, निष्पाप, निर्भय और सुखी हों|'*

**(आश्रय दीक्षा मन्त्र मूल संस्कृत)**

**धन्योऽस्मि पूर्णकामोऽस्मि निष्पापो निर्भयः सुखी ।**
**अक्षरगुरुयोगेन स्वामिनारायणाऽऽश्रयात् ॥**

**पा सके मोक्ष अभिन्न आत्मा, लें शरण सहजानंद भूतात्मा |**
**हैं अक्षरब्रह्म हरि परमात्मा, पूज्य गुरु गुणातीत आत्मा || (२०)**

*भावार्थ: अपनी आत्मा की मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रभु सहजानंद की शरण लो| अक्षरब्रह्म हरि परमात्मा हैं| गुणों से परिपूर्ण सर्वात्मा गुरु पूज्य हैं|*

**जाएं पुन्य संत सत्संग शरन, कर धार कंठ द्वि-लड़ी मालन |**
**करें सदैव महंत जी अनुसरन, हों पालक सत्संग प्रचोदन || (२१)**

*भावार्थ: पावन संत सत्संग की शरण में जाएं| गले में लकड़ी की दो लड़ी वाली माला पहनें| सदैव मठ स्वामी का अनुसरण करें एवं सत्संग के नियमों का पालन करें|*

**जाएं शरण श्री सदगुरु के, न हो मंगल बिन गुरु कृपा के |**
**बिन दया ब्रह्मस्वरूप गुरु के, हों नहीं शिक्षित ब्रह्मविद्या के || (२२)**

*भावार्थ: सदगुरु देव की शरण में जाएं क्योंकि उनकी कृपा के बिना कल्याण नहीं हो सकता| बिना ब्रह्मस्वरूप गुरु के ब्रह्मविद्या का ज्ञान नहीं लिया जा सकता|*

**बिन कृपा गुरुदेव अक्षरब्रह्म, असंभव पाएं ज्ञान ब्रह्मम |**
**नहीं पा सकेंगे नर पुंगलम, अटल अभिशंसा श्रीअच्युतम || (२३)**

*भावार्थ: प्राणियों के लिए बिना अक्षरब्रह्म गुरु की कृपा के ब्रह्म-ज्ञान एवं प्रभु की अटूट श्रद्धा पाना असंभव है|*

**बिन ब्रह्म रूप गुरु आशीषा, पा नहीं सकें नर भक्ति ईशा |**
**न हो उपागम आनंद हियसा, हों नहीं दूर भौतिक क्लेशा || (२४)**

*भावार्थ: ब्रह्म (प्राप्त किए) गुरु के आशीर्वाद के बिना प्राणी प्रभु की भक्ति नहीं पा सकते| न ही उन्हें हृदय में परमानंद की अनुभूति हो सकती है, और न ही उनके सांसारिक क्लेश दूर हो सकते हैं|*

**पा सको आशीष लो शरन, गुरु अक्षरब्रह्म सम आधवन |**
**करो अनुभव हृदय में अजन, कर सको प्राप्त आयु लक्ष्यन || (२५)**

*भावार्थ: आशीर्वाद के लिए प्रभु समान अक्षरब्रह्म गुरु की शरण में जाओ| ईश्वर का हृदय में अनुभव करो और अपने जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति करो|*

**करो त्याग तुम मादकता, दें मादक तत्व स्थूल कष्टता |**
**सत्संगी बरतो सतर्कता, यह पदार्थ दें गहन विपन्नता || (२६)**

*भावार्थ: हे सत्संगी, सतर्क रहते हुए सभी मादक पदार्थों का त्याग करो| यह तत्व शारीरिक कष्ट देते हैं एवं गहन आपदा में डाल देते हैं|*

**करो नहीं सेवन तत्व मादक, हो मदिरा भांग या ताम्रक |**
**नहीं बनो कभी तुम धूम्रक, सभी यह तत्व अत्यंत नाशक || (२७)**

*भावार्थ: कभी भी मादक तत्व जैसे शराब, भांग अथवा तम्बाकू का सेवन नहीं करो| कभी धूम्रपान नहीं करो| यह सब पदार्थ अति हानिकारक हैं|*

**नर नारि सुनो तुम ध्यान से, रहो सदैव दूर व्यसन द्यत से |**
**बद विचार परस्त्रीगमन से, करें यह दुर्गन दूर ध्येय से || (२८)**

*भावार्थ: हे नर नारि, ध्यान से सुनो - जुआ एवं व्यभिचार (परस्त्रीगमन) जैसे व्यसनों से दूर रहो| यह दुर्गण तुम्हें लक्ष्य से दूर ले जाएंगे|*

**सत्संगी मानो यह प्रवचन, छोड़ो खाना मांस अण्डन |**
**मत्स्य मुकुन्दक और भूतघ्न, हींग आदि सब तत्व उत्तेजन || (२९)**

*भावार्थ: सत्संगी, मेरे इस प्रवचन को मानो| मांस, अंडा, मछली, प्याज, लहसुन, हींग आदि को खाना छोड़ो| यह सब उत्तेजना प्रदान करने वाले पदार्थ हैं|*

**करो ग्रहण तुम पेय पदार्थ, हो जल दुग्ध सम कोई पेयार्थ |**
**केवल पश्चात शोधक विद्यार्थ, न पियो कभी निषिद्ध पदार्थ || (३०)**

*भावार्थ: हे शिक्षार्थी, जल, दुग्ध तथा अन्य समान पेय पदार्थ छानने के पश्चात ही ग्रहण करो| निषिद्ध पदार्थों को कभी नहीं लो|*

**है चोरी करना महा-पाप, समझो सत्संगी इसे अभिशाप |**
**हेतु धर्म भी समझो इसे श्राप, न कभी करो तुम यह दुष्पाप || (३१)**

*भावार्थ: हे सत्संगी, चोरी करना महा-पाप है, इसे अभिशाप समझो| धर्म के कारण भी (अगर ऐसी कभी आवश्यक्ता पड़े) इस दुष्पाप को कभी न करो, इसको श्राप समझो|*

**न स्वीकारो बिन अनुमोदन, परीर पुष्प सम कोई प्रकरन |**
**बिन स्वीकृति किया यदि ग्रहन, समझो एक प्रकार का लुंठन || (३२)**

*भावार्थ: बिना अनुमति के फल, पुष्प इत्यादि पदार्थ भी नहीं लो| बिना अनुमति के ग्रहण किए पदार्थ एक प्रकार की चोरी ही है|*

**नहीं करो तुम वध किसी जन, पशु पक्षी कीट और जन्मिन |**
**रहे सदा स्मरण ग्रन्थ धर्मन, श्रुति स्मृति अन्य सनातन शिक्षन || (३३)**

*भावार्थ: कभी किसी मनुष्य, पशु, पक्षी, कीटाणु एवं जीवाणु का वध नहीं करो| सदैव धर्म ग्रन्थ, श्रुति, स्मृति एवं अन्य सनातन शिक्षा को स्मरण रखो |*

**है महान धर्म भक्त अहिंसा, नहीं है पाप कोई सम हिंसा |**
**हिंसा करती प्रदुष्ट पुरुषा, अहिंसा सों हो जीवन मृदुसा || (३४)**

*भावार्थ: अहिंसा ही महान धर्म है| हिंसा समान कोई दूसरा पाप नहीं है| हिंसा (प्रवृति) से पुरुष दुष्ट बन जाता है| अहिंसा से जीवन में मधुरता आती है|*

**हेतु यज्ञ नहीं स्वीकृति बलि, बकरी सम कोई निर्दोष अलि |**
**होता अति भयंकर काज फलि, हो श्रापित जाओ नर्क ग्रहलि || (३५)**

*भावार्थ: यज्ञ हेतु भी किसी बकरी अथवा समान निर्दोष जंतु की बलि नहीं दो| हे सत्संगी, इस का फल (बलि देने का) समझो| श्रापित होकर नर्क गृह में चले जाओगे|*

**जब करो तुम यज्ञ सम्पादन, हो नहीं अहित अन्य जीवन |**
**हो तुम पालक विधि अनुकरन, श्रुति स्मृति औ धर्म ग्रंथन || (३६)**

*भावार्थ: जब यज्ञ का सम्पादन करो तो कभी किसी दूसरे प्राणी की हानि न हो| (यज्ञ करने में) श्रुति, स्मृति, अन्य धार्मिक ग्रंथों एवं नियमों का पालन करो|*

**नहीं करो तुम भोग मांस का, चाहे वह हो प्रसाद यज्ञ का |**
**चाहे किसी सत कर्मकांड का, चढ़ा भोग ईश्वर प्रतिमा का || (३७)**

*भावार्थ: कभी भी मांस भक्षण न करो यद्यपि वह यज्ञ का प्रसाद हो अथवा पवित्र कर्मकांड का भाग हो अथवा ईश्वर की प्रतिमा पर भोग स्वरुप चढ़ा हुआ हो|*

**नहीं करो प्रहार अन्य जन, बनो अहिंसावादी भक्तगन |**
**नहीं बोलो कभी कटु वचन, नहीं हो अहित अन्य आवित्तन || (३८)**

*भावार्थ: कभी किसी पर प्रहार न करो| हे भक्तगण, सदैव अहिंसावादी रहो| न कभी किसे से कटु वचन बोलो और न ही किसी प्राणी का अहित करो|*

**नहीं करो कभी तुम हिंसा, हेतु प्राप्त धन या प्रशंसा |**
**नहीं करो तुम बल अभ्यासा, हेतु तृप्ति दम्भ एहस औ ईर्षा || (३९)**

*भावार्थ: धन, यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए कभी हिंसा न करो| अहंकार, क्रोध एवं ईर्ष्या की तृप्ति के लिए कभी बल का प्रयोग न करो (हिंसा न करो)|*

**हो किसी प्रकार की हिंसा, मानस मौखिक या स्थूलसा |**
**देती स्वामीनारायण क्लेशा, रहें स्थित जो सबके मानसा || (४०)**

*भावार्थ: मानसिक, मौखिक अथवा शारीरिक, किसी भी प्रकार की हिंसा (भगवान्) स्वामीनारायण को कष्ट देती है जो सब के हृदय में वास करते हैं|*

**समझो है हिंसा आत्मघात, न करो कभी कृत दुराघात |**
**चाहे हो गिर कर गिरि उच्चात, फांसी विष या अन्य पद्धात || (४१)**

*भावार्थ: आत्महत्या भी एक (प्रकार की) हिंसा है| यह दुष्कार्य, चाहे वह पर्वत सम ऊंचाई से गिरकर, फांसी लगाकर, विष द्वारा अथवा किसी भी विधि से कभी न करो|*

**नहीं करो कभी स्व व् अन्य वध, कारण व्यथा शर्म डर क्रुद्ध |**
**चाहे तुम हो रोगिन् प्रबद्ध, तब भी समझो धर्म विरुद्ध || (४२)**

*भावार्थ: हे भक्त, आत्म-हत्या अथवा किसी की भी हत्या दुःख, शर्म, डर, क्रोध, अथवा रोगी होने के कारण न करो| यह धर्म विरुद्ध है|*

**न करो स्वघात तीर्थस्थान, सुनो ध्यान से तुम भागवान |**
**हो ध्येय यद्यपि निर्वाण पान, या हो अन्य कोई अभिरूचान || (४३)**

*भावार्थ: हे धर्मार्थी, ध्यान से सुनो| तीर्थ स्थान पर मोक्ष प्राप्ति हेतु अथवा कोई और वैध कारण हो, आत्मघात न करो|*

**हैं भगवान् ही एकमात्र कर्ता, वही हैं कृपालु रक्षक भर्ता |**
**करेंगे दूर वह सभी चिंता, रखो पूर्ण उन पर विश्वसता || (४४)**

*भावार्थ: प्रभु ही एकमात्र कर्ता, करुणामय रक्षक एवं पालन कर्ता हैं| वही तुम्हारी सभी चिंताओं को दूर करेंगे| उन पर पूर्ण आस्था रखो |*

**हो यह विश्वास सदैव हृदय, करते जो नारायण वही श्रेय |**
**वही तुम्हारा भाग्य दैव्य, स्वामीनारायण हैं मोक्षेय || (४५)**

*भावार्थ: अपने हृदय में यह विश्वास रखो कि जो भी प्रभु करते हैं ,वही तुम्हारे लिए श्रेष्ठ है| वही तुम्हारा प्रारब्ध है| प्रभु ही मोक्ष दाता हैं|*

**करें दूर बाधा आशुतोष, पाप आशंका व् सभी दोष |**
**होगा जीवन पूर्ण संतोष, दें वह परमानन्द परितोष || (४६)**

*भावार्थ: प्रभु तुम्हारी सभी आपदा, दोष, पाप, भय एवं बुरी आदतों को दूर करेंगे| तुम्हारा जीवन परमानंद एवं संतुष्टि से पूर्ण हो प्रसन्न होगा|*

**कर पाओगे तुम सत्य दर्शन, श्री अक्षर पुरुषोत्तम भगवन |**
**होंगे विकसित अंदर शुभ गुन, कृपा शक्ति सों हरि आधवन || (४७)**

*भावार्थ: तुम्हें श्री अक्षर पुरुषोत्तम प्रभु के साक्षात दर्शन होंगे| भगवान् की कृपा और शक्ति से शुभ प्रवृत्तियां जागृत होंगी|*

**जब हो जाएं जाग्रत सुविचार, लें शरण हम श्री जगताधार |**
**नहीं रहेंगे भाव लाचार, बनेंगे सुखी बल सों भर्तार || (४८)**

*भावार्थ: हम प्रभु की शरण लें, जब ऐसे सुविचार जाग्रत होंगे तब हमारी लाचारी के भाव विलुप्त हो जाएंगे और प्रभु की शक्ति से सुखी बनेंगे|*

**रखो सदा ध्यान स्वच्छता, न करो कृत वर्जित सामान्यता |**
**थूकना मूत्र मलोत्सर्गता, समझो निषिद्ध थल आम जनता || (४९)**

*भावार्थ: स्वच्छता का सदैव ध्यान रखो एवं जो कार्य समाज द्वारा वर्जित हैं, उन्हें न करो| थूकना, मूत्र एवं मल विसर्जन कुछ स्थानों पर वर्जित है (अतः वहां यह न करो)|*

**करो पालन तुम सदा शुद्धता, हो चाहे बाह्य आंतरिकता |**
**है अत्यंत प्रिय प्रभु पवित्रता, करें भगवान प्रेम शुद्ध भक्ता || (५०)**

*भावार्थ: बाहरी एवं आतंरिक (दोनों ही) स्थिति में शुद्ध रहो| प्रभु को शुद्धता अति प्रिय है| भगवान् शुद्ध भक्तों को प्रेम करते हैं|*

**उठो ब्रह्ममुहूर्त सत्संगी, करो कर्म दैनिक अन्तरंगी |**
**धारो शुद्ध वस्त्र हे योगी, करो नमन तब हरि शुभांगी || (५१)**

*भावार्थ: हे सत्संगी, ब्रह्ममुहूर्त में उठकर नित्यकर्म (स्नान इत्यादि) करो| स्वच्छ वस्त्रों को धारण करो और प्रभु को नमन करो|*

**बैठो तुम अग्र-भाग भगवन, हो आसीन स्वच्छ आसन |**
**हो पूर्व या उत्तर आनन, करो तब हरि अनंत उपासन || (५२)**

*भावार्थ: (शुद्ध होकर) स्वच्छ आसन पर भगवान् के सम्मुख मुख को पूर्व अथवा उत्तर दिशा में रखते हुए प्रभु का पूजन करो|*

**करो तुम अर्चन मन्त्र उच्चारन, रख हृदय विभूत गुरु धारन |**
**ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र चन्दन, करो अर्पण पुनीत नारायन || (५३)**

*भावार्थ: श्रेष्ठ गुरु को हृदय में धारण कर (प्रभु स्तुति) मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रभु को अर्पित चन्दन द्वारा अपने मस्तिष्क पर यू-आकार (ऊर्ध्वपुण्ड्र) तिलक लगाओ|*

**लगाओ भाल बिंदी कुमकुम, चमके जैसे आभा सूर्योदयम |**
**लगाओ लेप चन्दन वक्ष अंगम, ऊपरी द्वि-बाहु उर्ध्व भागम || (५४)**

*भावार्थ: ललाट पर सूर्योदय सूर्य की आभा भांति कुमकुम बिंदी धारण करो| साथ ही वक्ष एवं बाहों के ऊपरी भाग पर चन्दन का लेप लगाओ|*

**नारि सुनें यह वचन आवश्यक, हो तुम कुमकुम बिंदीधारक |**
**अनुसार श्रुति है यही धार्मिक, है नहीं उचित तिलक मष्तिष्क || (५५)**

*भावार्थ: नारियों, यह आवश्यक वचन सुनो| तुम कुमकुम बिंदी धारण करो| श्रुति के अनुसार यही धार्मिक है| मष्तिष्क पर चन्दन धारण करना उचित नहीं है|*

**हेतु सौभाग्य करो तुम पूजा, लेकर शरण भगवन अधोक्षजा |**
**करो गान कीर्ति अग्रिजा, हो केंद्रित आत्म चित्त साधुजा || (५६)**

*भावार्थ: सौभाग्य प्राप्ति हेतु नारायण की शरण में जाकर उनकी स्तुति करें| हे साधु, आत्म पर केंद्रित करते हुए साधना करें तथा प्रभु के गुणगान करें|*

**भक्ति मंत्रोच्चारण सुष्मि, अक्षरं अहं पुरुषोत्तम दासोस्मि |**
**है यह मन्त्र सम दिनकर रश्मि, प्रभु आशीष सों पाएं अस्मि || (५७)**

*भावार्थ: 'अक्षरम् अहं पुरुषोत्तम दासोस्मि' भक्ति मन्त्र का उच्चारण करें| यह मन्त्र रवि किरणों के समान है (ज्ञान प्रकाश देता है)| नारायण के आशीर्वाद से गौरव की प्राप्ति करें|*

**करो तादात्म्य तुम आत्मा, पुरुषोत्तम श्री अक्षरब्रह्मा |**
**करो समर्पण अपनी चित्तमा, हो पथ शांत केंद्रित आत्मा || (५८)**

*भावार्थ: अपनी आत्मा में तल्लीन होकर शांत एवं केंद्रित आत्मिक अवस्था में अपने मष्तिष्क को प्रभु पुरुषोत्तम अक्षरधाम में समर्पित करो|*

**केवल गुरुदेव और भगवन, हैं अधिकारी दें देह निसर्गन |**
**करो सदा तुम इनका पूजन, हो लक्ष्य सदैव इनके पग चिंतन || (५९)**

*भावार्थ: केवल गुरु और भगवान् ही मोक्ष दिला सकते हैं| इनका सदैव पूजन करो| इनके चरणों का चिंतन ही लक्ष्य हो|*

**रखो समक्ष तुम विग्रह इनके, ऊपर आसन स्वच्छ मंच के |**
**करो दर्शन पावन भगवन के, करो पान मधु नयन अक्षर के || (६०)**

*भावार्थ: (प्रभु एवं गुरु) इनकी मूर्तियां एक उच्च स्वच्छ आसन पर रखो जिससे उनके पुण्य दर्शन होते रहें| परब्रह्म के नेत्रों से बरस रहे अमृत का पान करो|*

**रखो यह क्रम मूर्ति मंच पर, प्रथम नारायण फिर गुरुवर |**
**तद्पश्चात श्रीजी प्रभुवर, अद्भुत भगवद कृपा जिन पर || (६१)**

*भावार्थ: मंच पर मूर्ति इस क्रम में रखो - पहले नारायण, फिर गुरुदेव, तद्पश्चात श्री जी, जिनके ऊपर प्रभु की विशेष कृपा है|*

**गुरु परम्परा के अनुसार, रखो मूर्ति सब गुरु आभार |**
**हों मूर्ति सब दिव्यावतार, जो दिए आत्मिक ज्ञान संसार || (६२)**

*भावार्थ: गुरु परम्परा के अनुसार सभी गुरुदेवों की मूर्तियां आभार सहित रखो| इनके साथ दिव्य अवतारों की भी मूर्तियां रखो जिन्होंने इस संसार को आत्मिक ज्ञान दिया|*

**करो आवाहन श्री नारायन, संग गुरु औ दिव्य अवतारन |**
**नमन करबद्ध दासभावन, करो उच्चारण मन्त्र आवाह्न || (६३)**

*भावार्थ: भगवान्, गुरु एवं सभी दिव्य अवतारों का हृदय में दास भाव रखते हुए करबद्ध आवाह्न मन्त्र के उच्चारण के साथ आवाहन कीजिए|*

**उत्कृष्ट श्री स्वामीनारायन, करो जय जयकार तुम भगवन |**
**हे सर्व-गुण-संपन्न ब्रह्म अजन, करो तुम कृपा हम सब मलिन || (६४)**

*भावार्थ: भगवान् स्वामी नारायण श्रेष्ठ हैं| तुम उनकी जयकार करो| हे सर्व-गुण-संपन्न ब्रह्म (गुरु), हम दीनों पर कृपा करो|*

**करो पूजन तुम हरि सुलभता, मिले परमानंद सहज दिव्यता |**
**पा सान्निध्य पावन भगवंता, हरि दर्शन सों पाएं भाग्यता || (६५)**

*भावार्थ: प्रभु का पूजन अति सुलभता से करें (शुद्ध हृदय से करें)| दिव्य भगवान् का सानिध्य मिलेगा| हरि दर्शन से भाग्यशाली होंगे|*

**मूल संस्कृत आह्वान मन्त्र**

**उत्तिष्ठ सहजानंद श्री हरे पुरुषोत्तम |**
**गुणातीताक्षरा ब्राह्मण उत्तिष्ठ कृपया गुरो ||**
**आगम्यताम ही पूजार्थं आगम्यताम मद-आत्मतः |**
**सान्निध्याद दर्शनाद दिव्यात सौभाग्यम वर्धते मम ||**

**करें गुणगान हरि की महिमा, स्थिर समाधि चित्त आत्मा |**
**फेरें माला नारायण नामा, सम्मुख बैठ अग्र मूर्ति अभिमा || (६६)**

*भावार्थ: (तब) समाधि स्थिर मन से प्रभु की महिमा का गुणगान करें| प्रभु की मूर्ति के सम्मुख बैठकर हरि नाम लेते हुए माला जप करें|*

**फेरें तपनी माला तद्पश्चात, इक चरण खड़े हो धर्मोंनात्त |**
**दोनों कर नभ उपान्तात, होगा सानिध्य श्रीमहस्वात || (६७)**

*भावार्थ: इसके पश्चात् हे धर्मी, एक पैर पर खड़े होकर एवं अपनी दोनों भुजाओं को आकाश की ओर उठाकर तपनी माला करें | इससे प्रभु का सानिध्य प्राप्त होता है|*

**करो तुम प्रदक्षिणा प्रतिमा, धर हृदय अक्षर पुरुषोत्तमा |**
**हैं सर्वव्यापक वासी आत्मा, किरण बिंदु वही जीवात्मा || (६८)**

*भावार्थ: तद्पश्चात हृदय में प्रभु का नाम धारण करते हुए (प्रभु) प्रतिमा की परिक्रमा लगाएं| प्रभु ही सर्वव्यापी एवं हम जीवों के आधार केंद्र हैं|*

**रख हृदय प्रेम दास-भावन, करें नर दंडवत भगवन नमन |**
**बैठें नारी अग्र भाग भगवन, उचित करें वह पांचांग वंदन || (६९)**

*भावार्थ: (तद्पश्चात) हृदय में प्रेम एवं दास भावना रखकर प्रभु को पुरुष दंडवत प्रणाम करें| नारियों के लिए उचित है कि वह प्रभु के सम्मुख बैठ केवल पांचांग प्रणाम करें|*

**करें पुरुष अतिरिक्त प्रणाम, दैनिक धर हरि हृदय आयाम |**
**मांगे क्षमा भगवन श्री राम, यदि दिए दुःख अनजान प्रियाम || (७०)**

*भावार्थ: पुरुष प्रभु को हृदय में मान देते हुए प्रतिदिन अतिरिक्त प्रणाम करें। प्रभु से क्षमा मांगे। (यह अतिरिक्त प्रणाम) किसी प्रियजन को अनजान में दुःख दिया हो तो यह क्षमा याचना के लिए है।*

**हो यदि कोई अभिलाषा हिय, पूजें नारायण हों भाव दिव्य |**
**करें गायन दिव्य मन्त्र अक्ष्य, श्री स्वामीनारायण अजेय || (७१)**

*भावार्थ: यदि कोई हृदय में इच्छा हो तो दिव्य-भाव से भगवान् का पूजन करें। प्रभु स्वामीनारायण के मन्त्र का गायन करें।*

**करें पूजन जब श्री अच्युतम, धरें हृदय अक्षर पुरुषोत्तम |**
**गाएं दिव्य पुनर्गमन मंत्रम, मंद मंद मन प्रसन्न अंतरतम || (७२)**

*भावार्थ: प्रभु का पूजन करते हुए हृदय में अक्षर पुरुषोत्तम को धारण करें। पुनर्गमन मन्त्र का धीरे धीरे प्रसन्न मन से गायन करें।*

**करो तुम अनुष्ठान नारायन, श्रद्धा भक्ति भाव अंतर्मन |**
**कृपा सों हो मंगल आत्मन, श्री अक्षर पुरुषोत्तम भगवन || (७३)**

*भावार्थ: हृदय में श्रद्धा भक्ति भाव से प्रभु का अनुष्ठान करो। श्री अक्षर पुरुषोत्तम प्रभु की कृपा से आत्मा को आनंद होगा।*

**मूल संस्कृत पुनर्गमन मन्त्र**

**भक्त्यैव दिव्य भावना पूजा ते सम अनुष्ठिता |**
**गच्छ'थ तवं मद-आत्मानम् अक्षर पुरुषोत्तम ||**

**हो सके दृढ़ संकल्प सत्संग, करो अध्ययन शास्त्र संत संग |**
**करो अनुसरण दिव्य शिक्षा अंग, दिए जो सन्त सद्गुरु सुभंग || (७४)**

*भावार्थ: सत्संग में दृढ़ संकल्प हेतु संतों के साथ शास्त्रों का अध्ययन करो| संतो, गुरु एवं ईश्वर द्वारा दी गई सब शिक्षाओं का अनुसरण करो|*

**तद्पश्चात भक्तिभाव नमन, करो सब संत भक्त विनय लगन |**
**हो जाए जब समाप्त पूजन, करो प्रारम्भ दैनिक कर्तव्यन || (७५)**

*भावार्थ: इसके पश्चात सभी संतो एवं भक्तों को विनय एवं श्रद्धा के साथ नमन करो| जब पूजन समाप्त हो जाए, नित्य दैनिक कार्यकलापों को प्रारम्भ करो|*

**है श्रेष्ठ नहीं करो तुम गृहन, भोजन जल या कोई द्रव्यन |**
**न कर लो जब तक तुम पूजन, रखो यही व्रत घर या बाह्यन || (७६)**

*भावार्थ: श्रेष्ठ यही है कि जब तक पूजन समाप्त न हो जाए, भोजन, जल अथवा कोई पेय ग्रहण न करो| जब दूर बस्ती गए हो, तब भी इसी नियम का पालन करो|*

**यदि असमर्थ करने में पूजन, कारण वृद्ध रोगी या दूजन |**
**कर सकें पूजन अन्यत जन, रखो स्मरण सदैव अपने मन || (७७)**

*भावार्थ: यदि वृद्ध, रोगी अथवा किसी अन्य कारण से पूजा करने में असमर्थ हैं तो हृदय में ध्यान रखिए कि अन्य जन (आपके स्थान पर) को पूजा करने की अनुमति है|*

**रखो ध्यान तुम नियम नित्यन, करे भक्त प्रत्येक पृथक पूजन |**
**करें भगवन वंदन व्यस्क-जन, प्रति संतान पश्चात प्रसवन || (७८)**

*भावार्थ: यह नियम ध्यान में रखें कि प्रत्येक सत्संगी पृथक पूजन करें| तथापि संतान उत्पत्ति के पश्चात उसके लिए पूजन करें|*

**हो गृह एक लघु मंदिर सुन्दर, हर निवास गृहस्थ भक्तवर |**
**करें वह दैनिक पूजन यहीं पर, श्रद्धा निष्ठा भक्ति प्रभुवर || (७९)**

*भावार्थ: हर गृहस्थ सत्संगी के निवास पर एक लघु सुन्दर मंदिर हो जहां वह श्रद्धा, निष्ठा एवं भक्ति से प्रभु का पूजन करें|*

**करें प्रतिष्ठा इस मंदिर घर, मूर्ति पूज्य पुरुषोत्तम अक्षर |**
**गुणातीत नमसित गुरुवर, गुरु परम्परा नियम अनुसर || (८०)**

*भावार्थ: इस लघु मंदिर में श्रद्धेय (भगवान्) अक्षर पुरषोत्तम एवं गुरु परम्परा के नियमों का अनुसरण करते हुए सभी आदरणीय गुण-संपन्न गुरुओं की मूर्तियों की प्रतिष्ठा करें|*

**सुनो सत्संगी तुम ध्यान से, करो नारायण स्तुति लगन से |**
**मधुर कीर्तन भजन गायन से, घर मंदिर भोर सांय समय से || (८१)**

*भावार्थ: हे सत्संगी, ध्यान से सुनो| (इस) मंदिर में प्रातः एवं सांय काल समय से मधुर भजन गाते हुए आरती एवं स्तुति करो|*

**जब गाएं आरती जयपाल, हो उच्च स्वर ध्वनि करताल |**
**जय स्वामीनारायण भूपाल, जय अक्षर पुरुषोत्तम अकाल || (८२)**

*भावार्थ: जब प्रभु की आरती गाएं तब उच्च स्वर में ताली बजाते हुए प्रभु स्वामीनारायण एवं भगवान् अक्षर पुरुषोत्तम का जय जयकार करें|*

**करो अर्पण प्रसाद प्रतिमा, प्रतिष्ठित मंदिर रूप अभिमा |**
**करो पश्चात स्तुति परमात्मा, करो ग्रहण प्रसाद पुण्यमा || (८३)**

*भावार्थ: मंदिर में प्रतिष्ठित दिव्यात्मा की प्रतिमा को प्रसाद अर्पण करो| तद्पश्चात प्रभु की स्तुति करो एवं (स्तुति समाप्त होने पर) पवित्र प्रसाद का भोग करो|*

**न करो ग्रहण भक्त तुम भोजन, जब तक हो न प्रभु को अर्पन |**
**नहीं करो कभी हरि को अर्पन, पदार्थ वर्जित अर्पन भगवन || (८४)**

*भावार्थ: जब तक प्रभु को अर्पण न हो जाए, तब तक तुम भोजन ग्रहण न करो| जो खाद्य पदार्थ प्रभु को अर्पण करने योग्य नहीं है, उसे न तो अर्पित करो न खाओ|*

**जब बैठो तुम गृह गंडमंडलन, गाओ कीर्तन श्रद्धा लगन |**
**भजन सों करो प्रसन्न भगवन, हों सब कार्य प्रभु समर्पन || (८५)**

*भावार्थ: जब अपने गृह मंदिर में बैठो तो श्रद्धा एवं संयम से कीर्तन करो| भजन से हरि को प्रसन्न करो| सभी तुम्हारे कार्य प्रभु को समर्पित होने चाहिए|*

**हों उपस्थित सब कुटुंब जन, जब करें गृह पूजन वामन |**
**करें ग्रन्थ पठन और श्रवन, मनन अर्चन सों पाएं अमन || (८६)**

*भावार्थ: सभी पारिवारिक जन एकत्रित होकर गृह-सभा में प्रभु का पूजन करें| (धार्मिक) ग्रंथों का पठन एवं श्रवण कर धर्म पर चिंतन करें और सुख पाएं|*

**दिए प्रेरणा श्री नारायन, कर सके निर्माण मंदिर पावन |**
**समझो मंदिर स्थान उपासन, पावन स्थल हरि भक्ति सरंक्षन || (८७)**

*भावार्थ: प्रभु की प्रेरणा से पवित्र मंदिरों का निर्माण हुआ है| यह मंदिर उपासना के स्थान हैं जो प्रभु की भक्ति को सरंक्षण देने के लिए हैं (अर्थात प्रोत्साहित करते हैं)|*

**रखो स्मरण नारायण शिक्षन, करो जब पूजन श्री भगवन |**
**करो तुम सेवा अक्षरब्रह्मन, जैसे करो सेवा हरि आधवन || (८८)**

*भावार्थ: प्रभु की यह शिक्षा है कि उनकी पूजा के साथ अक्षरब्रह्म की भी उसी प्रकार सेवा करो जैसे श्री नारायण की|*

**हैं अक्षरब्रह्म नारायण सेवक, गुरुवर सर्वोत्तम उन्नायक |**
**हैं वह नित्य माया उन्मूलक, रहते मगन सदैव कृत्य हरक || (८९)**

*भावार्थः श्रेष्ठ अक्षरब्रह्म सर्वोत्तम प्रभु सेवक हैं| वह नित्य हैं एवं माया का विनाश करने वाले हैं| वह सदैव प्रभु कार्य में तल्लीन रहते हैं|*

**हेतु पालन विधान नारायन, पा सकें मोक्ष सामान्य जन |**
**किए निर्माण यह दिव्य निर्गन, यह सत नित्य हरि गंडमंडलन || (९०)**

*भावार्थः भगवान् के निर्देश को पालन करते हुए जिस से सभी को मोक्ष (जीवन का अंतिम ध्येय) प्राप्त हो सके, इन दिव्य, पवित्र एवं धार्मिक मंदिरों का निर्माण किया गया है|*

**हैं विग्रह मंदिर अभिमंत्रित, अक्षरब्रह्म संग श्री भगवत |**
**जो विग्रह मध्य वेदिका स्थित, श्री अक्षरब्रह्म जन अति पूजित || (९१)**

*भावार्थः अक्षरब्रह्म के विग्रह श्री भगवान् के साथ प्राण-प्रतिष्ठित हैं| वह अक्षरब्रह्म जो सभी प्राणियों से पूजित हैं, मंदिर के मंच पर मध्य में विराजमान हैं|*

**समान अक्षरधाम गंडमंडल, हो गृह-मंदिर या अन्य स्थल |**
**अक्षरब्रह्म पुरषोत्तम विट्ठल, हों अभिमंत्रित मूर्ति मध्यल || (९२)**

*भावार्थः प्रभु के मंदिर अनुरूप ही गृह-मंदिर अथवा अन्य स्थान पर अक्षरब्रह्म एवं पुरुषोत्तम भगवान् की मूर्तियां अभिमंत्रित हो मध्य में स्थापित हों|*

**हो भोर सांय या अन्य समय, जो भी हो सुगम भक्त पुन्य |**
**जाएं मंदिर हरि दर्शन नित्य, हो जो समीप निवास गृहस्थ्य || (९३)**

*भावार्थः प्रातः, सांय अथवा जो भी समय पावन भक्त के लिए अनुकूल हो, अपने निवास स्थान के समीप प्रभु के दर्शन करने मंदिर जाएं|*

**रखो ध्यान सदैव वस्त्र का, जो अनुकूल धर्म संस्कार का |**
**हो संकेत सरंक्षण सभ्यता का, आदर्श नर नारि आदर का || (९४)**

*भावार्थ: अपने वस्त्रों का ध्यान रखो| वह धर्म एवं संस्कृति के अनुकूल होने चाहिए| सब नर नारियों के प्रति आदर एवं शिष्टता दर्शाने वाले होने चाहिए|*

**हेतु सत्संग अभिलाषा प्रबल, अति आवश्यक साधु संत बल |**
**जाएं जन समीप गंडमंडल, हरेक दिवस सप्ताह में एकल || (९५)**

*भावार्थ: सत्संग की इच्छा को प्रबल करने के लिए साधु संत बल आवश्यक है (अर्थात साधु संत का संग आवश्यक है)| कम से कम सप्ताह में एक बार समीप के मंदिर जाएं (साधु संग हेतु)|*

**हैं स्वामीनारायण भगवन्, घोषित श्री अक्षर सुधन्वन |**
**हैं वह अवतार परब्रह्मन, पुरुषोत्तम हरि नारायन || (९६)**

*भावार्थ: स्वामीनारायण भगवान् अक्षर नारायण के ही घोषित अवतार हैं| परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण के अवतार हैं|*

**इष्टदेव स्वामीनारायन, हैं अधिकारी उच्च उपासन |**
**समझो उन्हें अवतार भगवन, करो उन्हें तुम पूर्ण समर्पन || (९७)**

*भावार्थ: इष्टदेव भगवान् स्वामीनारायण सर्वोच्च पूजन के अधिकारी हैं| उन्हें प्रभु का अवतार समझो| उनके प्रति तुम पूर्ण समर्पण करो|*

**स्वामी गुणातीतानन्द, अवतार अक्षरब्रह्म स्वानन्द |**
**प्रभु अक्षरब्रह्म परमानन्द, प्रत्यक्ष परम्परा गुरु आनंद || (९८)**

*भावार्थ: स्वामी गुणातीतानन्द आत्मानंद अक्षरब्रह्म के अवतार हैं| भगवान् परमानंद अक्षरब्रह्म गुरु परम्परा के प्रत्यक्ष आनंदमयी प्रमाण हैं |*

**सम्प्रदाय श्री गुरु परम्परा, हैं गुणातीतानन्द अनुचरा |**
**वह हरि अक्षरब्रह्म अवतारा, गुरु सम्प्रदाय एक मात्रा || (९९)**

*भावार्थ: श्री गुणातीतानन्द गुरु परम्परा सम्प्रदाय का अनुसरण करने वाले हैं। प्रभु प्रारूप अक्षरब्रह्म धर्म-संस्था के एकमात्र गुरु हैं।*

**हैं हम सब के एक ही इष्टदेव, हैं हम सब के एक ही गुरुदेव |**
**करें अनुसरण हम एक ही तत्व, अतैव हैं हम एक जीव अवयव || (१००)**

*भावार्थ: हम सब के एक ही इष्टदेव हैं, एक ही गुरु हैं, एक ही सिद्धांत हैं, अतः हम समान एकीकृत जीव हैं।*

**करो अनुभूति सत्संगी भव्य, अक्षर पुरुषोत्तम मत दिव्य |**
**समझो धर्म सनातन नित्य, है यह प्रतिरूप ज्ञान ब्रह्मविद्य || (१०१)**

*भावार्थ: हे श्रेष्ठ भक्त, दिव्य अक्षर पुरुषोत्तम सिद्धांत को समझो। यही वैदिक सनातन ब्रह्मविद्य ज्ञान का प्रतिरूप है (अर्थात दिव्य अक्षर पुरुषोत्तम सिद्धांत ही ब्रह्मविद्या है)।*

**करो तुम पञ्च-सत्व अनुभूति, कहें संत जीव ईश्वर भ्रान्ति |**
**अक्षरब्रह्म और परब्रम्हति, हैं यह चिरकाल अनंत सत्यति || (१०२)**

*भावार्थ: जिन्हें संत पञ्च-सत्व कहते हैं, जीव, ईश्वर, माया, अक्षरब्रह्म एवं परब्रह्म की अनुभूति करो। यह चिरकाल तक रहने वाली अनंत सत्यता है।*

**अवतरित स्वामीनारायन, दिए ज्ञान शैली जन जीवन |**
**किए स्थापित दिव्य प्रचोदन, जो बने समस्त विश्व प्रकर्षिन् || (१०३)**

*भावार्थ: प्राणियों को दिव्य ज्ञान देने हेतु स्वामीनारायण जी ने अवतार लिया। सिद्धांत को स्थापित किया जिससे समस्त विश्व को श्रेष्ठतम बना सकें।*

**स्थित मध्यतस अनंत पञ्च-तत्व, अक्षर पुरुषोत्तम रहित-मिथ्य |**
**हो सम्बद्ध जीव ईश्वर सत्व, पाएं मुक्ति कृपा द्वि-दिव्य || (१०४)**

*भावार्थ: पञ्च-तत्वों में अक्षर एवं पुरुषोत्तम माया-रहित स्थित हैं। जीव एवं ईश्वर, इन दोनों दिव्यों के सहयोग से मुक्ति पा जाते हैं।*

**हैं उच्च परमात्मा परब्रह्म, करो यदि तुलना अक्षरब्रह्म |**
**सेवक नारायण अक्षरब्रह्म, करें जो सेवा नित्य परब्रह्म || (१०५)**

*भावार्थ: अक्षरब्रह्म से तुलना में परमात्मा परब्रह्म उच्च हैं। अक्षरब्रह्म भगवान् परब्रह्म के शाश्वत सेवक हैं।*

**हैं कर्ता सगुण शाश्वत भगवन, जो हैं स्थित उच्च अध्यासन |**
**कृपा से पाएं मुमुक्ष निर्मोचन, करें सब संत नर उनका पूजन || (१०६)**

*भावार्थ: सगुण शाश्वत भगवान् ही कर्ता हैं जो उच्च आसन पर आसीन हैं। उनकी कृपा से मोक्ष की इच्छा रखने वालों को मोक्ष मिलता है। सभी साधु एवं नर (इत्यादि) उनका पूजन करते हैं।*

**माध्यम गुरु दिव्य अक्षरब्रह्म, दें आशीष सर्वव्यापी अदम |**
**हैं भाव पूर्ण देवत्व परब्रह्म, दें अति आनंद हरि इन्द्रकर्म || (१०७)**

*भावार्थ: दिव्य गुरु अक्षरब्रह्म के माध्यम से सर्वव्यापी परमात्मा आशीष देते हैं। प्रभु देवत्व भाव से पूर्ण हैं (अति दयालु हैं)। भगवान् प्रचुर आनंद प्राप्त कराते हैं।*

**करो प्रेम गुरु अक्षरब्रह्म, हैं आत्मबुद्धि प्रसाद आनंदम |**
**हैं वह गुरु अवतार परब्रह्म, करो मनन पूर्ण समर्पणम || (१०८)**

*भावार्थ: अक्षरब्रह्म गुरु से प्रेम करो। वह आत्मबुद्धि प्रसादज सात्त्विक सुख है। गुरु (अक्षरब्रह्म) परमात्मा के ही अवतार हैं | उनका पूर्ण भक्ति के साथ मनन करो (उन पर ध्यान केंद्रित करो)।*

**स्वामीनारायण मन्त्र दिव्य, अलौकिक और आत्मिक पुन्य |**
**दिया यह मन्त्र प्रभु अनन्य, करो गायन अनवरत पौन्य || (१०९)**

*भावार्थ: स्वामीनारायण मन्त्र जो अलौकिक एवं आध्यात्मिक है, एकनिष्ठ प्रभु ने दिया है, उस पवित्र मन्त्र का निरंतर जाप करो|*

**समझो इस मन्त्र का सार, हैं स्वामी अक्षरब्रह्म भर्तार |**
**सार पुरुषोत्तम चक्रधार, जो हैं उच्च अक्षरब्रह्म प्रज्ञार || (११०)**

*भावार्थ: इस मन्त्र का भाव समझो| स्वामी का अर्थ गुरु अक्षरब्रह्म है एवं पुरुषोत्तम का अर्थ नारायण है, जो गुरु अक्षरब्रह्म से उच्च हैं|*

**स्वामीनारायण हरि नमसित, दिए भूमण्डल दिव्य सत्य मत |**
**करें प्रसार गुणातीत पंडित, सर्वत देश विदेश मध्य बुद्धिमत || (१११)**

*भावार्थ: यह सत्य सिद्धांत पूज्यनीय भगवान् स्वामीनारायण ने विश्व में प्रकट किया| इसका प्रसार गुणातीत गुरुओं ने समस्त देश विदेश में बुद्धिमानों के मध्य किया|*

**हुए स्थापित स्वरुप विग्रह, महाराज शास्त्री के अनुग्रह |**
**करें पुष्टि यह धार्मिक ग्रन्थः, गुरु जीवन चरित वर्णित यह || (११२)**

*भावार्थ: श्री शास्त्री जी महाराज ने कृपा कर इन्हें मूर्ति रूप में स्थापित किया| इसकी गुरु जीवन चरित्र धार्मिक पुस्तकों में पुष्टि की गई है|*

**किए प्रत्याभूत पावन विधान, स्वामी गुरु प्रमुख महान |**
**करो तुम आत्मसात यह ज्ञान, संग गुरु जो स्वरूप भगवान् || (११३)**

*भावार्थ: यह सिद्धांत स्वामी गुरु प्रमुख जी महाराज ने प्रत्याभूत किया| इस सत्य का भगवत रुपी गुरु के संग से आत्मसात करो|*

**है यह सिद्धांत सत्य शाश्वत, दे मोक्ष जन जब करें स्वीकृत |**
**समझो इसे तत्व प्रज्ञ दिव्यत, अक्षर पुरुषोत्तम दर्शन मत || (११४)**

*भावार्थ: इस सिद्धांत को सत्य शाश्वत समझो जो ग्रहण करने पर प्राणियों को मोक्ष प्रदान करता है| इस मत को अक्षर-पुरुषोत्तम दर्शन दिव्य ज्ञानरूपी तत्व समझो|*

**करो मनन तुम सदैव यह मत, सर्वोच्च तत्व अति प्रिय भगवत |**
**संत सत्संग दृढ़ अभिशंसत, दे हिय आनंद अनुसरित नियत || (११५)**

*भावार्थ: इस दिव्य सिद्धांत का चिंतन करो ,जो सर्वोच्च तत्व है तथा प्रभु को अति प्रिय है| नियम के पालन से संत सत्संग दृढ़तापूर्वक अनुशंसित कर हृदय में आनंद देता है|*

**करो तुम स्थापित तादात्म्य, पृथक त्रि-काया प्रति आत्मय |**
**पा सको ब्रह्मस्वरूप सुगम्य, करो अर्चन तारक परब्रह्म्य || (११६)**

*भावार्थ: त्रिकाया से पृथक आत्मा के प्रति एक-तत्व हो जाओ| ब्रह्मस्वरूप (हरि) को सुगमता से प्राप्त करो | उत्कृष्ट परब्रह्म की उपासना करो|*

**करो अर्पण तुम श्रद्धा प्रभुवर, हैं वही सार्वभौम श्री अक्षर |**
**करो पालन धर्म गुरुवर, हो नहीं भक्ति अधर्म अनुकर || (११७)**

*भावार्थ: तुम प्रभु को श्रद्धा अर्पण करो, वही सर्वव्यापी श्री अक्षर (भगवान्) हैं| सदैव धर्म एवं गुरु (आज्ञा) का पालन करो| भक्ति कभी भी अधर्म के अनुकरण से नहीं हो सकती|*

**नहीं करो अनैतिक व्यवहार, समझो कपट भक्ति आधार |**
**चाहे अपदेश पर्व मनोहार, या कोई कृत्य विवेकाचार || (११८)**

*भावार्थ: अनैतिक व्यवहार कभी न करो| इसे भक्ति आधार का कपट समझो| चाहे महत्वपूर्ण उत्सव अथवा कोई बुद्धिमत कार्य का बहाना भी हो|*

**रहो सदैव मुक्त मादकता, भांग मदिरा सम सब मूलता |**
**हैं द्यत-कर्म दुर्वचन असतता, यह कार्य विरोधी धर्मता || (११९)**

*भावार्थ: भांग, मदिरा अथवा अन्य नशीले पदार्थों, जुआ खेलना एवं मिथ्य दुर्वचन बोलने से सदैव दूर रहो| यह कार्य धर्म विरोधी हैं|*

**करो ध्यान तुम केंद्रित वैराग, करो यह कार्य रहित-अनुराग |**
**करो गुरु अक्षरब्रह्म से राग, भक्ति परब्रह्म से संयम तुराग || (१२०)**

*भावार्थ: लगाव-रहित कार्य करते हुए वैराग्य पर ध्यान केंद्रित करो| अक्षरब्रह्म से प्रेम करो| प्रभु भक्ति से चंचलता नियंत्रित होती है|*

**हो जब भी सामना अपमान, भय संकट विवेचना त्रपान |**
**नहीं करो सत्संग परित्यान, रहे निष्ठा प्रति गुरु भगवान् || (१२१)**

*भावार्थ: जब भी अपमान, भय, संकट, आलोचना अथवा शर्म का सामना हो, तो सत्संग का त्याग न करो| गुरु और भगवान् के प्रति निष्ठा रहे|*

**करो सेवा सत्संगी भगवान्, पवित्र भाव हिय रख सुजान |**
**समझो इसे तुम भाग्य महान, है यही द्वार हरि-भक्त निर्वान || (१२२)**

*भावार्थ: हे भद्र, भगवान् एवं भक्तों की पवित्र भाव से सेवा करो| इसे अपना सौभाग्य समझो| हरि भक्तों, यही मोक्ष का द्वार है|*

**न करो कभी तुम व्यर्थ क्षण, बिन सत्संग बिन हरि भक्ति रमण |**
**न करो तुम त्याग पुन्य कर्मण, न प्रमाद आलोचन अन्य गण || (१२३)**

*भावार्थ: बिना सत्संग और मनभावन भक्ति के व्यर्थ में समय नष्ट नहीं करो| अपने (धार्मिक) कर्मों का त्याग न करो| दूसरों की भूल (त्रुटि) की आलोचना न करो|*

**रहो सदा तल्लीन हरि भक्ति, जैसे वर्णित सत आगना श्रुति |**
**करे यह तप मुक्त लौकिक कृति, बनाए नर रहित-दंभ भ्रमति || (१२४)**

*भावार्थ: जैसे पवित्र आगना ग्रन्थ में वर्णित है, प्रभु भक्ति में तल्लीन रहो| यही तुम्हारे लौकिक कृत्यों से मुक्ति दिलाएगी| तुम्हें अहंकार, माया आदि से रहित करेगी|*

**करो समर्पित तुम प्रति क्षन, हरि सेवा सत्संग चिंतन मनन |**
**महिमामंडन श्री नारायन, पठन ग्रन्थ पावन सनातन || (१२५)**

*भावार्थ: अपना प्रत्येक क्षण हरि सेवा, सत्संग, चिंतन, मनन एवं दिव्य सनातन धर्म ग्रंथों के अध्ययन में लगाओ|*

**है नितांत शरण सत्संग संत, साधन यही करे जो दोष अंत |**
**जागें सद्गुण हों सब कष्ट अंत, मिलेगा मोक्ष है जो लक्ष्य संत || (१२६)**

*भावार्थ: संत सत्संग की शरण आवश्यक है| यही एक साधन है जो तुम्हारे दोषों को दूर कर सद्गुण जाग्रत करेगा जिससे कष्टों का अंत होगा, एवं मोक्ष मिलेगा जो संतों का लक्ष्य है|*

**लो आनंद संत सत्संग शरन, करें स्वामीनारायण शुभन |**
**करें कृपा गुणातीत गुरुन, जीवन तृप्त पूर्ण प्रह्लादन || (१२७)**

*भावार्थ: संत सत्संग शरण का आनंद लो| स्वामीनारायण शुभ करें| गुणातीत गुरुओं की कृपा हो| जीवन सुखी एवं प्रमोद से पूर्ण हो|*

**सत्संगी तुम हो भाग्यवान, पा अक्षर पुरुषोत्तम अव्यान |**
**यह आनंद सत्य दिव्य महान, दे संत सत्संग मंगल रसपान || (१२८)**

*भावार्थ: हे सत्संगी, तुम अत्यंत भाग्यशाली हो कि तुम्हें अक्षर एवं पुरुषोत्तम भगवान् का सानिध्य मिला| यह सत्य आनंद महान दिव्य है| संत सत्संग के मंगल रस का पान करो|*

**है यदि हृदय तुम्हारे अभिमान, ढोंग होड़ डाह इच्छा मान |**
**है हिय बैर स्वार्थ अरमान, मिले न शुभ फल अर्चन भगवान् || (१२९)**

*भावार्थ: यदि हृदय में अभिमान, ढोंग , प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या, शत्रुता, सम्मान की इच्छा अथवा स्वार्थ-पूर्ति का मनोरथ हो, तो भगवान् के पूजन का शुभ फल नहीं मिलता|*

**करो पूजन श्री नारायन, धर लगन हृदय पग आधवन |**
**हो चित्त भाव श्रद्धा समर्पन, करो प्रसन्न तुम अक्षर भगवन् || (१३०)**

*भावार्थ: हृदय में प्रभु के चरणों में लगन से (श्रद्धा से) तुम भगवान् का पूजन करो| निष्ठा एवं नेक नियती से अक्षर भगवान् को प्रसन्न करो|*

**हैं नहीं रूप मानव गुरुवर, हैं नहीं रूप नर श्री गिरिधर |**
**हैं अक्षर पुरुषोत्तम श्रेष्ठकर, वह दिव्य रहित-माया शुभकर || (१३१)**

*भावार्थ: गुरुदेव एवं भगवान् मानव रूप नहीं हैं| मंगल करने वाले अति श्रेष्ठ अक्षर पुरुषोत्तम दिव्य हैं| वह माया से परे हैं|*

**रखो दृढ़ निष्ठा प्रति भगवन, हो अति सुख पड़ें गुरुदेव चरन |**
**हो न कभी दुर्बल चंचल मन, धैर्य सों मिले शक्ति भगवन || (१३२)**

*भावार्थ: प्रभु के प्रति दृढ़ श्रद्धा भाव रखो| केवल गुरु के चरणों से ही सुख प्राप्त होता है| चंचल मन को दुर्बल न होने दो| धैर्य से प्रभु से शक्ति मिलती है|*

**पढ़ो गाओ तुम जीवन चरित, स्वामीनारायण श्रीमत |**
**हो दिव्य शिक्षा तुम अभ्यस्त, करो स्मरण प्रसंग भगवत || (१३३)**

*भावार्थ: श्रीमत स्वामीनारायण के जीवन चरित्र को पढ़ो और गाओ| उनकी दिव्य शिक्षाओं के अभ्यस्त हो (अर्थात हृदय में धारण करो)| भगवान् के जीवन प्रसंगो का स्मरण करते रहो|*

**करो साक्षात्कार गुरुवर, हैं प्रत्यक्ष भगवन ब्रह्मअक्षर |**
**हो हृदय प्रेम लगन भक्तवर, हो पूर्ण भाव दिव्य अर्नव || (१३४)**

*भावार्थ: अक्षरब्रह्म (गुरुदेव) ही प्रत्यक्ष भगवान् हैं| तुम गुरु से साक्षात्कार करो| भगवान् दिव्य भाव से पूर्ण हैं| हे भक्तवर, उनके लिए हृदय में प्रेम और निष्ठा हो|*

**हो गहन प्रेम प्रति अक्षरब्रह्म, है एकल साधन मिलें तुम्हें ब्रह्म |**
**दे ईश-प्रेम नर अनुभव दिव्यम, हो जीवन अमन सौभाग्यम || (१३५)**

*भावार्थ: (गुरु) अक्षरब्रह्म से गहन प्रेम ही ब्रह्म स्थिति प्राप्त करने का एकमात्र साधन है| ईश्वर प्रेम प्राणियों को पवित्रता की अनुभूति देता है| इस से जीवन शान्तिमय एवं सौभाग्यशाली बनता है|*

**करो पान तुम शुभ गुण गुरु के, पा सको तब अनुभव परब्रह्म के |**
**करो चिंतन प्रसंग नाथ के, हृदय धार भाव पिय गुरु के || (१३६)**

*भावार्थ: परब्रह्म की अनुभूति पा सको इस हेतु गुरुदेव के शुभ गुणों का पान करो (अर्थात उन्हें स्वीकार करो)| गुरुदेव के प्रिय भाव हृदय में धारण कर उन के (जीवन) प्रसंगों पर चिंतन करो|*

**हो समागम श्री गुरु दिव्य, कर समर्पित मति कर्म वाक्य |**
**गुरु ही नारायण अमृत्य, अवतार भगवन परब्रह्म दिव्य || (१३७)**

*भावार्थ: अपने विचार, कर्म, वाक्य (इत्यादि) समर्पित कर दिव्य गुरु की संगत करो| वही दिव्य परब्रह्म भगवान् के अवतार अमर नारायण हैं|*

**हों भाव सदैव सकारात्मक, न दो ध्यान शब्द नकारात्मक |**
**बोलो वचन तुम सदैव प्रेरक, बढ़ाओ उमंग पीड़ित जीवक || (१३८)**

*भावार्थ: सदैव सकारात्मक भाव रखो| नकारात्मक शब्दों पर कभी ध्यान न दो| प्रोत्साहिक वाक्य ही बोलो| पीड़ित प्राणियों का उत्साह वर्धन करो|*

**करो तुम सदैव महिमामंडन, ब्रह्म परब्रह्म अक्षर भगवन |**
**हो हिय हरि प्रति श्रद्धा गहन, सब साधु संत जो भक्त अजन || (१३९)**

*भावार्थ: भगवान् अक्षर ब्रह्म परब्रह्म का सदैव गुणगान करो| जो प्रभु भक्त साधु संत हैं, उनके प्रति हृदय में गहन प्रेम एवं श्रद्धा रखो|*

**रखो मुमुक्षु सदा सुहृद्भाव, सब नर-नारि सृष्टि भूधाव |**
**हो हृदय सदैव ब्रह्मभाव, संत प्रति व्यवहार दयाभाव || (१४०)**

*भावार्थ: हे मोक्ष की इच्छा रखने वाले (सत्संगी), सभी नर-नारि प्रभु की सृष्टि हैं, अतः उनसे सौहार्दपूर्ण व्यवहार करो| सदैव हृदय में ब्रह्मभाव रखो| संतों के प्रति दयाभाव व्यवहार रखो|*

**हो पक्ष हिय श्री परमात्मा, बुद्धि विवेक में बसें त्रिविक्रमा |**
**स्वामीनारायण परब्रह्मा, गुणातीत गुरु अक्षरब्रह्मा || (१४१)**

*भावार्थ: हृदय में भगवान् का पक्ष हो (अर्थात हृदय में भगवान् सदैव बसें)| विवेक बुद्धि में तीनों लोकों के स्वामी पवित्र भगवान् परब्रह्म स्वामीनारायण एवं गुणों से संपन्न गुरु अक्षरब्रह्म समाएं|*

**करो अनुसरण तुम सदा नियम, जो दिए हमें नारायण अदम |**
**करो नमन तुम महापुरुषम, हुए जो शरणागति श्री विश्वम || (१४२)**

*भावार्थ: भगवान् द्वारा दिए सिद्धांतों का सदैव अनुसरण करो| जो प्रभु की शरण में चले गए हैं, ऐसे संतों को सदैव नमन करो|*

**करो पालन आज्ञा धर्मेश, गुरु अक्षरब्रह्म व् हरि सर्वेश |**
**हो अनुभूति हृदय देवेश, संकल्प दृढ़ से मानो आदेश || (१४३)**

भावार्थ: हे धर्म पालक (धर्मेश), गुरु अक्षरब्रह्म एवं भगवान् की आज्ञा का पालन करो| प्रभु की हृदय में अनुभूति करते हुए उनके आदेशों को दृढ़ संकल्प से मानो|

**करो पालन प्रभु की शिक्षा, तुरंत बिन आलस हे मुमुक्षा |**
**करो प्रयास प्रसन्न अधीक्षा, मुदित मन हिय रखो ज्ञानेच्छा || (१४४)**

*भावार्थ: हे मुमुक्ष (मोक्ष की इच्छा रखने वाले), प्रभु की शिक्षाओं का तुरंत बिना आलस्य के पालन करो| ज्ञान की इच्छा रखते हुए आनंद एवं उमंग मन से प्रभु को प्रसन्न करने का प्रयास करो|*

**करो मनन तुम शांत हृदय से, अंतरावलोकन हर दिन चित्त से |**
**कारण सम्बंधित इस जग से, पाएं कैसे ध्येय भवक कर्म से || (१४५)**

*भावार्थ: शांत हृदय से प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण करते हुए मनन करो| हम इस संसार में क्यों आये हैं? वर्तमान कर्मों से हम अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कैसे कर सकते हैं?*

**हो एकात्मक तुम पुरुषोत्तम, करो अर्पण श्रद्धा तुम उत्तम |**
**करें आंकलन अपने कृत्यम, बिन आलस्य प्रतिदिन हे भक्तम || (१४६)**

*भावार्थ: प्रभु से एकात्म होकर अपनी शुद्ध श्रद्धा उन्हें अर्पण करो| हृदय में बिना आलस्य के तुम प्रतिदिन अपने उद्देश्यों का आंकलन करो|*

**स्वामीनारायण एकल कर्ता, सर्वोच्च सत्व वही नियंता |**
**करो अनुभूति हरि कृतज्ञता, एकीभाव सों श्रीभगवंता || (१४७)**

*भावार्थ: स्वामीनारायण ही अकेले कर्ता हैं| वही सर्वोच्च सार एवं भगवान हैं| भगवान् के सानिध्य से उनकी कृतज्ञता की अनुभूति करो|*

**पा कृपा स्वामीनारायन, हो तुम सुकृत संतुष्ट व् प्रसन्न |**
**रहित-संदेह और चिंता मन, करें अनुभूति परम प्रह्लादन || (१४८)**

*भावार्थ: स्वामीनारायन (भगवान्) की कृपा पाकर तुम सौभाग्यशाली, संतुष्ट एवं प्रसन्न हो| मन संदेह एवं चिंता रहित हो| परम आनंद की अनुभूति करें|*

**कर अनुभूति नारायन हृदय, करें चिंतन प्रतिदिन अचिन्त्य |**
**करें स्मरण भगवन महात्मय, हो तब चित्त सुखी एकाग्रय || (१४९)**

*भावार्थ: अपने हृदय में अनुभूति कर भगवान् का प्रतिदिन चिंतन करें | प्रभु की महिमा का स्मरण करें | इस से चित्त एकाग्र होकर सुखी होगा|*

**समझो सत्य है आत्मा भिन्न, त्रिअवस्था त्रिगुन और त्रितन |**
**रखो यह विश्वास तुम प्रतिदिन, हैं हम सभी अवयव भगवन || (१५०)**

*भावार्थ: यह समझो कि आत्मा (सांसारिक) तीन अवस्थाओं, तीन गुणों एवं तीन शरीरों से भिन्न है| यह विश्वास प्रतिदिन रखो कि हम सभी श्री हरि का ही भाग हैं|*

**है यह संसार अल्पकालिक, परन्तु आत्मा सर्वकालिक |**
**पुंगल सच्चिदानंद स्वरूपक, शाश्वत सतत अनंत अमर्तक || (१५१)**

*भावार्थ: यह विश्व अल्पकालिक (अस्थायी) है| परन्तु आत्मा सर्वकालिक है| आत्मा सच्चिदानंद स्वरुप, शाश्वत, शुद्ध, अनंत एवं अमर है|*

**हुई काल भूत जो घटना, हो रही है इस काल अधुना |**
**होगी भविष्य में जो घटना, है प्रभु प्रसाद हेतु कल्याना || (१५२)**

*भावार्थ: जो पूर्व काल में घटनाएं हुईं, जो इस काल में हो रहीं हैं अथवा जो भविष्य में होंगी, वह सब प्रभु की कृपा से हमारे हित के लिए होती हैं|*

**करो पूजन तुम नित्य भगवन, धर हृदय स्वामीनारायन |**
**ब्रह्मस्वरूप गुरु का चिंतन, हिय पूर्ण निष्ठा और लगन || (१५३)**

*भावार्थ: हृदय में स्वामीनारायण भगवान् को धारण कर उनका तुम प्रतिदिन पूजन करो| हृदय में पूर्ण आस्था एवं भक्ति के साथ ब्रह्मस्वरूप गुरु का चिन्तन करो|*

**जब मति पूर्ण दुर्भावना, रोष जलन मद और वासना |**
**करो ध्यान लगन से एकना, हूँ मैं पुरुषोत्तम परिज्वना || (१५४)**

*भावार्थ: जब बुद्धि दुर्भावों – काम, क्रोध, मद, अहंकार से पूर्ण हो, तब भगवान् का ध्यान करो| (विचार करो) मैं पुरुषोत्तम का सेवक हूँ|*

**रहे यह विचार सदैव अंतर्मन, सदा संग स्वामीनारायन |**
**हैं वही पाप नाशक भगवन, करें वह विध्वंस सभी विघ्नन || (१५५)**

*भावार्थ: अपने अंतर्मन में यह विचार रखो कि स्वामीनारायण सदैव मेरे साथ हैं| सभी विघ्नों एवं पापों का नाश करने वाले वही भगवान् हैं|*

**करो पालन सदैव स्व-धर्म, करो त्याग सदा पर-धर्म |**
**करना पालन निर्देश अदम, कहें सद्गुरु संत स्व-धर्म || (१५६)**

*भावार्थ: अपने स्व-धर्म का पालन करो तथा पर-धर्म का सदैव त्याग करो | भगवान् एवं संत गुरु के निर्देश का पालन करना ही स्व-धर्म है|*

**हो यदि अवज्ञा उनके निर्देशन, गुरुदेव व् स्वामीनारायन |**
**करें जब स्वेच्छा कृत भूजन, है यही पर-धर्म कहें संतन || (१५७)**

*भावार्थ: यदि गुरुदेव एवं (भगवान्) स्वामीनारायण के निर्देशों की अवज्ञा हो और व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से कर्म करें, उसे संत पर-धर्म कहते हैं|*

**कर दो त्याग सत्संगी कर्म, जो करें उल्लंघन नियम धर्म |**
**हों जो बाधा अक्षर वंदनम, हों प्रतीति सम हितकर स्वयं || (१५८)**

*भावार्थ: हे सत्संगी, जो कर्म धर्म नियमों का उल्लंघन करें, प्रभु की भक्ति में बाधा हों, चाहे वह स्वयं को हितकर लगें, ऐसे कर्मों को त्याग दो|*

**करो सम्मान तुम वृद्ध जन, जन प्राज्ञ करें सत्य अनुसरन |**
**सदा बोलो तुम विनम्र वचन, करो उन्हें श्रद्धापूर्ण नमन || (१५९)**

*भावार्थ: बुद्धिमान, वृद्ध एवं सदाचार का अनुसरण करते हों, उनका तुम सम्मान करो| विनम्र वचन के साथ सदैव उनका श्रद्धापूर्वक नमन करो|*

**समझो अधिकारी हैं सम्मान, वरिष्ठ गुरु और बुद्धिमान |**
**करो उचित तुम इनका मान, वचन विनम्र सुकृत प्रविधान || (१६०)**

*भावार्थ: वरिष्ठ, गुरु एवं बुद्धिमान, इन्हें सम्मान का अधिकारी समझो| इन्हें विनम्र वचन एवं शुभ कार्यों से तुम उचित मान दो|*

**करो सम्बोधित व्यष्टि जन, उनके अनुरूप गुण और प्रज्ञन |**
**दो सदैव उन्हें प्रोत्साहन, संभव कर सकें वह कृत भव्यन || (१६१)**

*भावार्थ: प्रत्येक व्यक्ति को उनके गुण और श्रेष्ठता के आधार पर सम्बोधित करो| सदैव उनको प्रोत्साहित करो ताकि वह श्रेष्ठ कार्य कर सकें|*

**बोलो सदैव तुम वचन सत्य, जो हों हितकारी और प्रिय |**
**बोलो नहीं कभी शब्द असत्य, न करो कभी आरोपित मिथ्य || (१६२)**

*भावार्थ: सदैव प्रिय, हितकारी सत्य शब्द ही बोलो| असत्य शब्द कभी नहीं बोलो| झूठा दोषारोपण न करो|*

**नहीं बोलो शब्द अरुचिकर, हों जो आक्रामक कष्टकर |**
**जो अपयशी अप्रिय घृणाकर, करें आहत भावना श्रावकर || (१६३)**

*भावार्थ: कभी अप्रिय, आक्रामक, कष्टदायक, अपयशकारी, कटु एवं घृणामयी शब्द नहीं बोलो जो श्रोता की भावनाओं को आहत करें|*

**नहीं बोलो तुम कभी असत्य, बोलो केवल हितकारी सत्य |**
**यदि संभव वचन करें अपथ्य, बोलो नहीं कभी ऐसा सत्य || (१६४)**

*भावार्थ: कभी झूठ नहीं बोलो| केवल हितकारी सत्य ही बोलो| यदि कोई अहित की संभावना हो, तो ऐसा सत्य नहीं बोलो|*

**नहीं करो तुम छिद्रान्वेषन, यह कृत्य न भाये नारायन |**
**करे यह रुष्ट गुरु करुन, फैलाए असंतोष समाजगन || (१६५)**

*भावार्थ: किसी की तुम बुराई नहीं करो| यह कार्य (बुराई करना) भगवान् को रुचिकर नहीं है, करुणामयी गुरु को रुष्ट करता है तथा समाज में असंतोष फैलाता है|*

**लगे यदि तुम्हें अति आवश्यक, होगा अप्रिय सत्य लाभकारक |**
**हो तुम सहचर अति शुभचिंतक, कहो वह माध्यम उपदेशक || (१६६)**

*भावार्थ: यदि हितकर कटु सत्य आवश्यक है क्योंकि तुम साथी के शुभ चिंतक हो, तब इसे केवल उपदेशक के माध्यम से ही बोलो|*

**न करो तुम कदापि दुष्कर्म, नहीं हों कभी विचार अधर्म |**
**करे यह कृत्य नष्ट बन्धुत्वम, बढ़ाए विरोध मध्य शुभेच्छुम || (१६७)**

*भावार्थ: कभी कोई बुरा कार्य न करो| कभी अधार्मिक विचार नहीं लाओ| यह शुभचिंतकों के मध्य विरोध बढ़ाते हैं और भाईचारा नष्ट करते हैं|*

**रखो सदैव सौहार्द भाव, रखो हिय स्मरण भक्त सद्भाव |**
**नहीं ढूंढो उनमें दोषभाव, न करो अप्रसन्न महानुभाव || (१६८)**

*भावार्थ: भक्तों के शुभ गुण को हृदय में स्मरण करते हुए उनके प्रति निष्ठ-भाव रखो| उनमें दोष नहीं ढूंढो| महापुरुषों को कभी अप्रसन्न नहीं करो|*

**नहीं हो उत्साहित सुकाल, नहीं हो निरुत्साहित दुर्काल |**
**होगा हितकारी हर काल, समझो यही इच्छा जयपाल || (१६९)**

*भावार्थ: शुभ समय में उत्साहित नहीं हो और बुरे समय में निरुत्साहित नहीं हो| हर काल में सदैव शुभ ही होगा| यही प्रभु की इच्छा समझो|*

**नहीं करो तुम कभी विवाद, है निरर्थक करना प्रतिवाद |**
**हो हृदय तुम्हारे समभाव, हों शिष्ट साधुवत तुम्हरे भाव || (१७०)**

*भावार्थ: कभी किसी से तर्क न करो| विवाद करना निरर्थक है| तुम्हारे हृदय में सदैव समभाव रहें| संतों के प्रति शिष्ट भाव रखो|*

**नहीं रखो कटुता किसी जन, वचन कृत्य विचार और लेखन |**
**समझो कटुता अमान्य कर्मन, फैलाए विश्व अकीर्ति मलिन || (१७१)**

*भावार्थ: कभी वचन, कार्य, विचार एवं लेखन से किसी से कटु न हो| यह अमान्य कृत्य हैं जो जग में अपयश एवं मलिनता का कारण है|*

**सुनो सत्संगी तुम पुन्य वचन, करो सेवा जनयित्र प्रतिदिन |**
**छुओ प्रथम भोर उनके चरन, करो तब आरम्भ कृत्य नैत्यन || (१७२)**

*भावार्थ: हे सत्संगी, यह पवित्र वचन सुनो| अपने माता पिता की प्रतिदिन सेवा करो| प्रातः पहले उनके चरण स्पर्श करो| उसके पश्चात नित्य कार्य प्रारम्भ करो|*

**करे पतोहू सास श्वसुर सेवा, समान निज माता पितृवा |**
**करें सरंक्षा श्वसुर श्वश्रूवा, सम पुत्री जाए निज गर्भवा || (१७३)**

*भावार्थ: पुत्रवधू अपने सास ससुर की सेवा अपने स्वयं के माता पिता समान करे| सास ससुर अपनी पुत्रवधू को स्वयं की पुत्री समान देखभाल करें|*

**करो शिक्षित सदा तुम संतान, माध्यम सत्संग धर्म अनुष्ठान |**
**रखो सदैव सहार्द ध्यान, अनुरूप अवस्था प्रियवान || (१७४)**

*भावार्थ: अपने पुत्र-पुत्रीओं को सत्संग एवं धार्मिक कृत्यों के माध्यम से शिक्षा दो| अपने स्वजनों की उनकी आर्थिक स्थिति के अनुसार स्नेहवश देखभाल करो|*

**बोलो सदैव तुम मधुर वचन, करो त्याग तुम तिक्त कथन |**
**करो नहीं कभी हनन दूजन, न हों विचार में बद प्रयोजन || (१७५)**

*भावार्थ: सदैव कटु वचन त्याग कर तुम मधुर वचन बोलो| कभी किसी की क्षति न करो| हृदय में कभी (किसी के लिए) बुरी नियति न रखो|*

**करो भोजन तुम गृह सहगत, परिवार युक्त भाव दिव्यत |**
**करो तुम अतिथि सत्कार उष्णत, हो अनुरूप स्व-उपगुप्तवित्त || (१७६)**

*भावार्थ: ईश्वरीय भाव से गृह में परिवार के साथ भोजन करो| अपने साधनों के अनुरूप अतिथि का दिल से स्वागत करो|*

**हो जाए यदि स्वजन अवसान, या करो अनुभूति दुर्निदान |**
**धर धैर्य करो हरि का ध्यान, करो अधिक पूजन भगवान् || (१७७)**

*भावार्थ: यदि घर में किसी की मृत्यु हो जाए अथवा कोई बुरा अवसर हो तो धैर्य रख कर प्रभु का ध्यान करो| भगवान् का अतिरिक्त पूजन करो|*

**मिल सकें सदाचारी संस्कार, पुत्र पुत्री और सब परिवार |**
**दो तुम शिक्षा दिव्य आचार, सत्संग सुचरित्र व् नेकाचार || (१७८)**

*भावार्थ: संतानों एवं परिवार को सदाचारी संस्कार मिल सकें, इसलिए उन्हें सत्संग, अच्छे व्यवहार एवं सदाचार के दिव्य सिद्धांत बताओ|*

**जब शिशु हो गर्भ अन्तरङ्गन, पढ़ो पुस्तक धार्मिक पावन |**
**हो निष्ठा अक्षर नारायन, यही एक साधन सौम्य शिक्षन || (१७९)**

*भावार्थ: जब शिशु माँ के गर्भ में हो तब अक्षर भगवान् में आस्था रख धार्मिक पुस्तकों का पठन करो| यह (बच्चों में) नेक शिक्षा देने का साधन है|*

**न रखें नर परनारि कुदृष्टि, समझें समान भगिनी जनयित्री |**
**सदृश्य नारी न रखें कुदृष्टि, पर-नर समान भ्रात पित सृष्टि || (१८०)**

*भावार्थ: पुरुष सभी पर-नारीओं को बहन एवं माता स्वरुप समझ कुदृष्टि न रखें| उसी प्रकार नारियां भी इस संसार में पुरुषों को भाई एवं पिता समान समझें|*

**अतिरिक्त अशुभ काल आत्ययिक, रहना बिन पत्नी आवश्यक |**
**रहें न नर एकल कभी साझक, संग नारि जो नहीं संबद्धक || (१८१)**

*भावार्थ: आपात काल के अतिरिक्त अगर पत्नी के बिना रहना आवश्यक हो, तो पुरुष कभी युवा नारी के साथ अकेले न रहें|*

**हो रहना नितांत बिन पति, अतिरिक्त अशुभ आपात स्थिति |**
**रहें नहीं एकल कभी युवति, हैं संग नर नहीं कुल सम्बन्धिति || (१८२)**

*भावार्थ: आपात काल के अतिरिक्त (नारी को) युवती को बिना पति के रहना आवश्यक हो तो कभी कुल से असंबंधित पुरुष के साथ नहीं रहना चाहिए|*

**नहीं करो स्पर्श पर-नारी, करो स्पर्श स्व-कुल सत्कारी |**
**नर स्पर्श उचित नहीं नारी, हो न जब तक गोत्र सहचारी || (१८३)**

*भावार्थ: कभी पर-नारी को स्पर्श नहीं करो| अपने कुल की नारी को सम्मान सहित स्पर्श कर सकते हो| (उसी प्रकार) नारियों को पुरुष का स्पर्श निषेध है जब तक वह अपने गोत्र के न हों (अर्थात निकट सम्बन्धी न हों)|*

**परन्तु यदि हो आत्ययिक स्थिति, कर सको स्पर्श हेतु परिरक्षति |**
**पर हो यदि सामान्य परिस्थिति, करो सदैव तुम नियम अनुसृति || (१८४)**

*भावार्थ: यदि आपात स्थिति हो तो रक्षा करने वाले को स्पर्श कर सकते हो| लेकिन यदि सामान्य परिस्थिति हो, तो नियम का पालन करो|*

**समझो तुम है निषेध निहारन, अश्लील चलचित्र व् नाट्यन |**
**ले जाएं यह कृत्य ओर भंजन, करें यह नष्ट संस्कार सद्गुन || (१८५)**

*भावार्थ: अश्लील चलचित्र और नाटक इत्यादि देखना निषेध है| यह कृत्य विनाश की ओर ले जाते हैं| यह सद्गुण और संस्कार को नष्ट कर देते हैं|*

**नहीं करो संग हे सत्संगी, व्यसनी निर्लज्ज निरुत्संगी |**
**व्यभिचारी और अपथ्यंगी, ले जाएं मार्ग नर्क यह संगी || (१८६)**

*भावार्थ: हे सत्संगी, व्यसनी, बेशर्म, उत्साहहीन, व्यभिचारी और अहित करने वालों का कभी संग न करो| इनका साथ नर्क का मार्ग है|*

**कर सको रक्षा अपने धर्म की, सदनारि अनिवार्य बोध की |**
**बनो पालक धर्म नियम की, करो न संगत भ्रष्ट नारी की || (१८७)**

*भावार्थ: हे सदनारी (धार्मिक नारी), अपने धर्म की रक्षा करने के लिए यह ज्ञान आवश्यक है| धर्म नियमों का पालन करो| कुलक्षणा नारी की संगत न करो|*

**न करो श्रवण कोई वितर्क, श्रवण गायन व् पठन पुस्तक |**
**जो हों कामुक रत्यात्मक, ले जाए यह कृत्य ओर नास्तिक || (१८८)**

*भावार्थ: तुम वह चर्चा, गाना, दृश्य एवं पुस्तक पाठ न करो जिससे इंद्रियां कामुक हों| यह कृत्य अधर्म की ओर ले जाता है|*

**लेन देन धन भूमि और संपत्ति, करो सदा लिखित कार्यान्विति |**
**हो साक्ष्य प्रस्तुत हर स्थिति, हो राष्ट्र विधि विधान अनुसरति || (१८९)**

*भावार्थ: धन, भूमि, संपत्ति इत्यादि का लेन देन सदैव लिखित होना चाहिए| हर स्तिथि में साक्षी की उपस्थिति एवं राष्ट्र विधि विधान का पालन हो|*

**सभी जग सामाजिक व्यवहार, करो लिखित हो चाहे परिवार |**
**करो कृत सदा विधि अनुसार, देगा मन शांति यह आचार || (१९०)**

*भावार्थ: सभी जग सामाजिक लेन देन लिखित में करो चाहे वह परिवार के साथ हो| यह कार्य नियम अनुसार करो| यह पद्धिति हृदय को शान्ति देगी|*

**नहीं करो कभी व्यवहार, संग अधर्मी जो कुटिल पात्र |**
**प्रति सत दिव्यांग निरहंकार, रहो सदैव तुम कृपाकार || (१९१)**

*भावार्थ: अनैतिक एवं दुष्ट व्यक्तियों के साथ कोई लेन देन न करो| दिव्यांग एवं निरीह लोगों के प्रति अनुकम्पा बरतो|*

**नहीं करो कार्य शीघ्रता में, करो मनन तथ्य शांत चित्त में |**
**करो चिंतन तुम कर्मफल में, हों जब तृप्त तब लगें कार्य में || (१९२)**

*भावार्थ: किसी कार्य को शीघ्रता से न करें| शांत चित्त से तथ्यों का विश्लेषण करें| कर्म के फल के बारे में सोचें| जब संतुष्ट हो जाएं तब कार्य में लग जाएं|*

**समझो उत्कोच महा अपराध, व्यय धन व्यर्थ करो न साध |**
**नहीं करो सत्संगी गाध, करो तुम व्यय है जितनी राध || (१९३)**

*भावार्थ: घूस महा अपराध समझो| व्यर्थ में धन व्यय करने की इच्छा न रखो| हे सत्संगी कभी लालच न करो| जितना धन हो (अर्थात जितनी कमाई हो), उतना ही तुम व्यय करो|*

**रखो तुम लेखा व्यय औ आय, अनुसार विधि विधान राज्य |**
**रहो सदैव तुम सत्य न्याय्य, नहीं रखो संपत्ति जो कुप्राय || (१९४)**

*भावार्थ: देश के विधि विधान के अनुसार आय एवं व्यय का लेखा रखो| सदैव सच्चे एवं सच्चरित्र रहो| अनुचित विधि से अर्जित संपत्ति को न रखो|*

**दो उपसत्ति स्वामीनारायन, दसवां भाग तुम अपनी आयन |**
**समझो है यदि यह अतिशय धन, दो अवश्य भाग बीसवां ददन || (१९५)**

*भावार्थ: स्वामीनारायण (भगवान्) को अपनी आय का दसवां भाग अर्पित करो| यदि यह धन अत्यधिक हो, तो बीसवां भाग अवश्य दान दें|*

**समझो बचत अहम् हे गृहस्थन, धन रसद और उपयुक्त साधन |**
**जो हो तुम्हारी स्थिति इदन्तन, हृदय राख भविष्य प्रयोजन || (१९६)**

*भावार्थ: हे गृहस्थी, धन, खाद्य पदार्थ एवं अन्य साधनों की बचत वर्तमान परिस्थिति के अनुसार एवं भविष्य की योजनाओं को हृदय में रखते हुए महत्वपूर्ण है, ऐसा समझो |*

**हो जैसी गृहपति आयतन, दो सलिल और पोषक भोजन |**
**पशु पक्षी समान सब जीवन, नहीं दो कष्ट दीन सजीवन || (१९७)**

*भावार्थ: अपनी सामर्थ्य के अनुसार हे गृहस्थी, पशु, पक्षी एवं अन्य को जल एवं पोषक भोजन दो| दीन जीवों को कष्ट नहीं दो|*

**नहीं करो कभी विश्वासघात, लेन देन धन भूमि औ द्रव्यात |**
**रखो स्मरण सदैव यह बात, है धोखा देना पाप उदात्त || (१९८)**

*भावार्थ: धन, भूमि, अन्य वस्तुओं के लेन देन में कभी विश्वासघात नहीं करो| यह वचन स्मरण रखो कि धोखा देना महापाप है|*

**दो कर्मकर उचित पारिश्रमिक, है यह कर्तव्य तुम्हारा मालिक |**
**बनी सहमति मध्य नियोजक, हो न कम श्रमजीवी आयक || (१९९)**

*भावार्थ: हे नियोक्ता, यह तुम्हारा कर्तव्य है कि कर्मचारी को उचित वेतन दो| जो सहमति हुई है, उससे कम वेतन नहीं दो|*

**नहीं करो अपघात हे प्रशस्त, हों वचन आपके सदा आदृत |**
**जानो उच्चारित वचन सत, नहीं हों शब्द उपागम खंडित || (२००)**

*भावार्थ: हे भद्र पुरुष, कभी धोखा न दो| अपने वचनों का सदैव सम्मान करो| उच्चारित वचनों के महत्व को समझो| अपने शब्दों को कभी खंडित न करो (अर्थात अपने दिए आश्वासनों को निभाओ)|*

**शासक राज करें न्यायोचित, हों दयालु और धर्मोचित |**
**करें वह प्रजा पूर्ण पोषित, करें भौतिक विकास जो उचित || (२०१)**

*भावार्थ: शासक दयालु एवं धर्मोचित हों| वह न्यायोचित शासन करें| प्रजा का पूर्ण पोषण करते हुए उनका उचित भौतिक विकास करें|*

**करें प्रबंध स्वास्थ्य शिक्षा, खाद्य ऊर्जा जल और रक्षा |**
**बाटें वह संसाधन समकक्षा, हो नहीं भेदभाव एक पक्षा || (२०२)**

*भावार्थ: (शासक) स्वास्थ्य, शिक्षा, खाद्य, ऊर्जा, जल एवं रक्षा का प्रबंध करें| संसाधनों का वितरण किसी एक पक्ष से भेदभाव न करते हुए समान रूप से करें|*

**करें वह नियुक्त अधिकारीगन, हों जो समर्थ कार्य पूरन |**
**करें प्रशासक मंथन लक्षन, कौशल प्रवृति और गुणवन || (२०३)**

*भावार्थ: (शासक) ऐसे अधिकारियों को नियुक्त करें जो कार्य पूर्ण करने में समर्थ हों| शासक उनके व्यवहार, कौशलता, प्रवृत्ति एवं अन्य गुणों का मंथन करें (तभी नियुक्ति दें)|*

**करो तुम निवास संग परिजन, देश वही जहां हो स्वछंदन |**
**कर सको तुम पूजन स्व-भगवन, हो नहीं बाधा धर्म पालन || (२०४)**

*भावार्थ: अपने परिवार के साथ ऐसे देश में निवास करो जहां अपने भगवान् एवं धर्म पालन की स्वतन्त्रता हो और इसमें कोई बाधा न हो|*

**अगर जाओ तुम कभी विदेश, हेतु बोध जीविका या निवेश |**
**करो पालन सत्संग निर्देश, करो अर्चन पूजन सदा सर्वेश || (२०५)**

*भावार्थ: यदि तुम शिक्षा, जीविका अथवा व्यवसाय के लिए विदेश जाओ तो सदैव सत्संग के नियमों का पालन करते हुए भगवान् की स्तुति करते रहो|*

**करो तुम निवास जिस भी देश, दो सम्मान भूमि सम स्व-देश |**
**बनो उच्चतम नागरिक प्रदेश, करो पालन सदैव विधि निर्देश || (२०६)**

*भावार्थ: जिस देश में निवास करो उसे स्व-देश (मातृ-भूमि) समान सम्मान दो। वहां के एक उत्तम नागरिक बनो एवं (उस देश के) नियमों का सदैव पालन करो।*

**आ जाए यदि निकृष्ट काल, न हो कभी विचलित संग आल |**
**रखो धैर्य तुम हिय प्रतिकाल, करो सदैव पूजन महाकाल || (२०७)**

*भावार्थ: यदि बुरा समय आ जाए तो कभी परिवार सहित विचलित नहीं हो। हृदय में हर समय धैर्य धारण करो और भगवान् का सदैव पूजन करते रहो।*

**हो जाए यदि परिस्थिति प्रतिकूल, नहीं संभव कर सको अनुकूल |**
**करो त्याग तुरंत निरस्तूल, करो तुम उपनिवेश अन्य कूल || (२०८)**

*भावार्थ: यदि हालात प्रतिकूल हों, और अनुकूल होने की कोई संभावना न हो तब ऐसे उदासीन स्थान को त्याग अन्य तट (स्थान) पर प्रवास करो।*

**पारिवारिक युवा और युवति, करें प्रारम्भ शिक्षा शैशवति |**
**रहें दूर सदा अनुचित वृत्ति, करें त्याग दुर्व्यसन दुर्संगति ||(२०९)**

*भावार्थ: परिवार के युवा और युवति बचपन से ही शिक्षा प्रारम्भ करें। अनुचित व्यवहार, दुर्व्यसन एवं बुरी संगत से बचें।*

**विद्यार्थी कालावधि शिक्षन, हो पूर्ण ध्यान शिक्षा केंद्रन |**
**हो उमंग मान प्रति कृत्यन, होगी शिक्षा तब पूर्ण संपन्न || (२१०)**

*भावार्थ: शिक्षा काल में विद्यार्थी का पूरा ध्यान पढ़ाई पर केंद्रित होना चाहिए। इस शुभ कार्य के प्रति उमंग एवं आदर हो, तब शिक्षा सफलतापूर्वक ग्रहण होती है।*

**हों प्रबल संस्कार बालपन, हों विनम्र सद्गुण उपकारन |**
**नहीं छोड़ो शौर्य कुकालन, रहो सदैव निडर पराक्रमिन् || (२११)**

*भावार्थ; बचपन से ही विनम्र, सद्गुण एवं सेवा भाव के संस्कार प्रबल करो| बुरे समय में साहस नहीं छोड़ो| सदैव निडर एवं पराक्रमी रहो|*

**हों उत्पन्न संस्कार शिशुपन, परम स्नेह स्वामीनारायन |**
**करें प्रतिदिन पूजन भगवन, करें पंचांग प्रणाम जनयित्रन || (२१२)**

*भावार्थ: बालपन से ही स्वामीनारायण (भगवान्) से परम प्रेम के संस्कार उत्पन्न हों| प्रतिदिन भगवान् की पूजा करें| अपने माता पिता को पंचांग प्रणाम करें|*

**हो आयु किशोर वयस्क यावत, करो जीवन शैली अनुशासित |**
**न करो बदन संपर्क अनुचित, संभव करे जो ऊर्जा खंडित || (२१३)**

*भावार्थ: किशोर एवं व्यस्क आयु अवधि में जीवन शैली को अनुशासित रखो| किसी के साथ अनुचित कायिक संपर्क न करो जिससे ऊर्जा नष्ट होने की संभावना हो (मानसिक, शारीरिक अथवा आत्मिक ऊर्जा)|*

**चुनो अनुसार विभव उपक्रम, हों जो स्रोत विकास माध्यम |**
**नहीं चुनो तुम हेतु विनोदम, अथवा हेतु कृतार्थ अन्य चित्तम || (२१४)**

*भावार्थ: अपने सामर्थ्य के अनुसार जो विकास का साधन हो, ऐसा उपक्रम चुनो| केवल मनोरंजन अथवा किसी को तुष्ट करने के लिए नहीं चुनो|*

**नहीं करो तुम कभी आलस्य, हो करना जब आवश्यक कृत्य |**
**हो श्रद्धा प्रेम प्रति अमृत्य, करो पूजन दैनिक हरि दिव्य || (२१५)**

*भावार्थ: जब कोई महत्वपूर्ण कार्य करना हो, तो आलस्य न करो| हरि के प्रति श्रद्धा और प्रेम हो| भगवान् का पूजन प्रतिदिन करो|*

**होता असर संगत जग बृहत, संगत ढाले अनुरूप सम स्वत |**
**करो उचित चुनाव तुम संगत, केवल नर नारि चारु चरित || (२१६)**

*भावार्थ: संगत का विश्व में बड़ा प्रभाव है| संगत जैसी स्वयं होती है, उसी के अनुरूप ढाल देती है| अतः केवल श्रेष्ठ चरित्र वाले नर एवं नारियों की संगत का चुनाव करो|*

**नहीं करो तुम उन जन संगत, कृतघ्न कामुक दोगल असत |**
**रहो दूर तुम पुरुष लंपत, संगत सदृश्य जन करे व्यथित || (२१७)**

*भावार्थ: तुम सदैव कृतघ्न, कामी, पाखंडी एवं झूँठों की संगत का त्याग करो| चालबाज पुरुषों से तुम दूर रहो| यह संगत तुम्हें व्यथित कर देगी (अर्थात दुःखी कर देगी)|*

**नहीं करो संगत तुम उन जन, मानें नहीं जो हरि के अवतरन |**
**करें निंदा श्री हरि उपासन, समझो असत अमंगल भूजन || (२१८)**

*भावार्थ: जो हरि के अवतार न मानते हों एवं प्रभु की उपासना के निंदक हों, ऐसे लोगों की संगत नहीं करो| यह प्राणी अपवित्र एवं अमंगलकारी हैं|*

**करें वितर्क कहें ईश निर्गुन, हैं नहीं सगुन ऊर्जा भगवन |**
**नहीं करो तुम संगत ऐसे जन, न पढ़ो ग्रन्थ जो दे यह शिक्षन || (२१९)**

*भावार्थ: जो भगवान् को निर्गुण अथवा भगवान् को सगुन न मान ऊर्जा कहें, ऐसे लोगों की संगत नहीं करो| न ही ऐसी पुस्तक पढ़ो जो यह शिक्षा देती हो|*

**करो त्याग असत नास्तिक जन, जो निंदक मंदिर और विग्रहन |**
**करें जो भूजन निंदा संतन, अहिंसक देविल सम सत वृत्तिन || (२२०)**

*भावार्थ: ऐसे प्राणियों का तुम त्याग करो जो मंदिर एवं मूर्तियों के निंदक हैं, जो संत, अहिंसक, पवित्र एवं अच्छे चरित्र वालों की भर्त्सना करते हैं|*

**नहीं करो संगत उन दुर्जन, करें जो विरोध सद्गुरु शरन |**
**रखें द्वेष ग्रन्थ धर्म पावन, नहीं करें राह संत अनुसरन || (२२१)**

*भावार्थ: ऐसे दुर्जनों से सम्बन्ध नहीं रखो जो गुरुदेव की शरण, पावन धर्म ग्रन्थ का विरोध करें| संतों का मार्ग अनुसरण नहीं करें|*

**रहो दूर तुम दुष्चरित्र व्यक्ति, हों जिनके विचार रहित-भक्ति |**
**चाहे हों वह सिद्ध ऐहिक मति, हों प्रतीत पंडित धर्म श्रुति || (२२२)**

*भावार्थ: जिनके विचार भक्ति-रहित हों, ऐसे व्यक्तियों से दूर रहो चाहे वह सांसारिक सफलता में बुद्धिमत्त हों, धार्मिक ग्रंथों में विद्वान् प्रतीत होते हों|*

**नहीं रखो सम्बन्ध व्यक्तित्व, करें उपहास आत्मिक तत्व |**
**जो कुतर्की वैश्विक पुरुषत्व, रहित-श्रद्धा भक्ति अनात्म्वि || (२२३)**

*भावार्थ: ऐसे व्यक्तित्व वालों से सम्बन्ध नहीं रखो जो आध्यात्मिकता का उपहास करें, कुतर्की एवं सांसारिक भाव के हों, (हरि में) श्रद्धा और भक्ति से रहित भावशून्य हों|*

**जानो तुम अंतर सत्संग कुसंग, अनुभूति कुसंग छोड़ो संग |**
**लक्ष्य कुसंग है विनाश उमंग, करे जीवन भ्रमित मति विसंग || (२२४)**

*भावार्थ: सत्संग और कुसंग में अंतर समझो| कुसंग की अनुभूति होने पर (कुसंग का) संग छोड़ दो| कुसंग प्रसन्नता का नाश करता है, जीवन को भ्रमित एवं बुद्धि असंगत कर देता है|*

**नहीं दो कभी साथ उसका, है जो शिथिल पालक धर्म का |**
**समझे जो हरि गुरुदेव नरंका, स्वामीनारायण में आशंका || (२२५)**

*भावार्थ: उनका कभी साथ न दो जो धर्म पालन करने में शिथिल हैं, जो भगवान् और गुरु को नर-रूप समझते हैं तथा स्वामीनारायण के प्रति आशंकित हैं (अर्थात स्वामीनारायण को भगवान् नहीं मानते)|*

**करो त्याग तुम उन सब जन, जो ढूंढें सदैव दोष भक्तगन |**
**करें अपमान सदैव अन्यजन, हैं हठी करें अवज्ञा गुरुजन || (२२६)**

*भावार्थ: तुम उनका साथ त्याग दो जो भक्तगणों में सदैव दोष ढूंढते रहते हैं, दूसरे लोगों का अपमान करते रहते हैं, हठी हैं और गुरुदेव के आदेश का पालन नहीं करते|*

**करें कलंकित जो कर्म भव्य, करें आलोचना ग्रन्थ दिव्य |**
**हैं जो प्रतिकूल सत्संग पुन्य, त्यागो तुम ऐसे जन निष्क्रिय || (२२७)**

*भावार्थ: जो शुभ कर्मों को कलंकित करते हों, पवित्र ग्रंथों की आलोचना करते हों, संत सत्संग का विरोध करते हों, ऐसे व्यक्तियों का तुम त्याग कर दो|*

**जिनके असत शब्द दें आघात, निष्ठा प्रति हरि गुरु पितमात |**
**दें नहीं महत्व सत्संग धर्मात, रहो दूर यह नर हैं विषाक्त || (२२८)**

*भावार्थ: जिनके शब्द माता पिता, गुरु एवं भगवान् के प्रति निष्ठा पर प्रहार करते हों, सत्संग के नियमों को महत्व न देते हों, ऐसे पुरुषों का त्याग करो, यह विषरूपी हैं|*

**करो तुम संगत पुरुष विवेकी, करें जो सुप्रीति नन्द-देवकी |**
**पालक आज्ञा जनयित्र की, श्री पुरुषोत्तम अक्षर प्रभु की || (२२९)**

*भावार्थ: ऐसे पुरुषों का संग करो जो विवेकी हों, हरि में जिनका दृढ़ विश्वास हो, जो माता पिता, श्री पुरुषोत्तम (गुरु) एवं भगवान् अक्षर की आज्ञा मानें|*

**है जो नर नारि विश्वसनीय, ज्ञानी बुद्धिमान अशंकनीय |**
**दें आदर हरि गुरु अतुलनीय, करो संग तुम ऐसे माननीय || (२३०)**

*भावार्थ: जो नर, नारी विश्वसनीय, ज्ञानी, बुद्धिमान एवं शंका योग्य नहीं हैं, अतुलनीय गुरु एवं हरि का आदर करते हैं, ऐसे आदरणीयों का संग करो|*

**करो पालन तुम आज्ञा संत, साहस उमंग संकल्प सहित |**
**हो विनीत करो मदद तुरंत, संगत सदैव नर नारि शुचित || (२३१)**

*भावार्थ: संतों की आज्ञा को उत्सुकतापूर्वक, उमंग एवं दृढ़ता के साथ पालन करो| विनम्र एवं सदैव सहायता करने को तत्पर रहो| पवित्र नर नारि का संग करो|*

**जो नर नारि करें प्रशंसा, कार्य दिव्य हरि नर सदृशा |**
**समझें दैविक गुरु और अनिशा, करो संग तुम मनुषी मनुषा || (२३२)**

*भावार्थ: जो नर एवं नारी दैवीय गुरु एवं भगवान् के मानव समान कर्मों की प्रशंसा करते हों, गुरु और भगवान् को दैवीय मानते हों, ऐसे नर नारीओं का संग करो|*

**हों जिनके अंदर सुहृद्भाव, नहीं देखें अन्य त्रुटि व् अभाव |**
**करें ग्रहण जो सभी सद्भाव, हैं योग्य सत्संग महानुभाव || (२३३)**

*भावार्थ: जिनके हृदय में उत्तम भाव हों, जो किसी के अभाव एवं त्रुटियों को न देखते हों, जो दूसरों के गुण स्वीकार करते हों, ऐसे महापुरुष सत्संग करने के योग्य हैं|*

**हो आदर गुरु जिनके हृदय, नहीं समान अन्य कोई प्रिय |**
**समझें सदैव जो गुरु सेव्य, करो तुम संगत प्राणी दिव्य || (२३४)**

*भावार्थ: जिनके हृदय में गुरु के प्रति आदर हो, जिन्हें गुरु के समान कोई अन्य प्रिय न हो, जो गुरु को सदैव आराध्य समझें, ऐसे दिव्य प्राणियों सदा संग करो|*

**है संस्कृत ग्रंथों की भाषा, पढ़ें पढ़ाएं रखो अभिलाषा |**
**सीखो तुम सदा क्षेत्रीय भाषा, हो जैसी दाक्ष्य ग्राह्य आशा || (२३५)**

*भावार्थ: संस्कृत (सनातन धर्म) ग्रंथों की भाषा है| इसको पढ़ने एवं पढ़ाने की इच्छा रखो| (साथ में) अपनी क्षमता, वरीयता एवं अपेक्षा के अनुसार अपनी क्षेत्रीय भाषा का भी ज्ञान प्राप्त करें|*

**पढ़ो गुरु वचनामृत अहन्य, स्वामिनी वातो ग्रन्थ पुन्य |**
**पढ़ो जीवन चरित्र गुरु दिव्य, हो श्रद्धा भक्ति हिय अनन्य || (२३६)**

*भावार्थ: प्रतिदिन पवित्र ग्रन्थ गुरु वचनामृत 'स्वामिनी वातो' दिव्य गुरु जीवन चरित्र को हृदय में एकनिष्ठ श्रद्धा एवं भक्ति के साथ पढ़ो|*

**गुणातीत स्वामीनारायन, दी शिक्षा पाएं लक्ष्य भूजन |**
**करो उसे सत्संगी पालन, श्रवन मनन संग निश्चल मन || (२३७)**

*भावार्थ: स्वामीनारायण (भगवान) एवं गुणातीत (गुणों से संपन्न) गुरु की शिक्षाएं प्राणियों के ध्येय हैं| अतः सत्संगी, उनका शांत चित्त से श्रवन, मनन एवं पालन करो|*

**करो स्मरण अंतर बार बार, महिमा प्रभु और गुरु उदार |**
**हो श्रद्धा प्रेम अपरम्पार, है यही मार्ग दे अमन विहार || (२३८)**

*भावार्थ: अपार श्रद्धा एवं प्रेम से उदार प्रभु और गुरु की महिमा का बार बार स्मरण करो (गायन करो)| यही मार्ग है जो सुख और शान्ति देता है|*

**जो तर्क सम्प्रदाय प्रत्यक्न, करो नहीं कभी पठन श्रवन |**
**नहीं करो तुम विश्वास कथन, करें जो आशंकित तुम्हरे मन || (२३९)**

*भावार्थ: सम्प्रदाय के विरुद्ध तर्कों को न पढ़ो, न सुनो और न ही ऐसे किसी कथन पर विश्वास करो| यह तुम्हारे मन को आशंकित करेंगे|*

**करो सुदृढ़ तुम श्रद्धा परम, हिय स्वामीनारायन अच्युतम |**
**करो पालन सदैव संकल्पम, चतुर्मास यथा गुरु निर्देशम || (२४०)**

*भावार्थ: हृदय में भगवान् स्वामीनारायण के प्रति परम श्रद्धा को सुदृढ़ करने के संकल्प को गुरु के निर्देश के अनुसार चतुर्मास पालन करो|*

**हो पालक तुम व्रत चांद्रायन, अन्य नियत व्रत संग कीर्तन |**
**करो ईश्वर प्रदक्षिणा अर्पन, सुनो तुम सदैव आत्मिक वचन || (२४१)**

*भावार्थ: चांद्रायण व्रत एवं अन्य निर्धारित व्रतों का कीर्तन (भगवान् स्वामीनारायण) के साथ पालन करो| भगवान् की प्रदक्षिणा करो| सदैव आध्यात्मिक प्रवचन सुनो|*

**करो अर्पण तुम दंडवत नमन, धार हृदय प्रेम और लगन |**
**करो प्रयास हो सकें प्रसन्न, भगवान् स्वामीनारायन || (२४२)**

*भावार्थ: हृदय में श्रद्धा एवं प्रेम से (प्रभु को) दंडवत प्रणाम करो| भगवान् श्री स्वामीनारायण को प्रसन्न करने का प्रयास करो|*

**करो पठन और दो सत शिक्षन, पुन्य ग्रन्थ सम्प्रदाय सनातन |**
**अनुसार प्रज्ञता और अधिमन, यही मार्ग उचित कहें संतन || (२४३)**

*भावार्थ: अपनी बुद्धि एवं विचार के अनुसार पावन सनातन सम्प्रदाय शास्त्रों का पठन करो और इसकी शिक्षा (दूसरों को) दो| संत कहते हैं कि यही उचित मार्ग है|*

**करो वृद्धि प्रेम श्री भगवन, लो भाग उत्सव चित्त प्रसन्न |**
**हो हिय श्रद्धा प्रति आधवन, यह कार्य करेगा मंगल मन || (२४४)**

*भावार्थ: भगवान् में प्रेम बढ़ाने के लिए उनके प्रति हृदय में श्रद्धा से पर्वों में प्रसन्न चित्त से भाग लो| यह कृत्य हृदय को आनंदमय करेगा|*

**मनाओ तुम उत्सव जन्म दिन, त्रिविक्रम स्वामीनारायन |**
**अक्षरब्रह्म गुरुदेव दिव्यन, हो प्रेम लगन भक्ति हृदयन || (२४५)**

*भावार्थ: भगवान् स्वामीनारायण एवं श्री अक्षरब्रह्म गुरुदेव का जन्मोत्सव हृदय में श्रद्धा, प्रेम एवं भक्ति से मनाओ|*

**जैसें हों संभव उपलब्ध साधन, मनाओ सनातन पर्व पावन |**
**सम्बंधित पुन्यदिन अव्यापिन, गुरु सम्प्रदाय और भगवन || (२४६)**

*भावार्थ: जैसे साधन संभवतः उपलब्ध हों, (उसके अनुसार) सनातन पवित्र उत्सव, सम्प्रदाय के गुरुओं एवं भगवान् से सम्बंधित विशेष दिन पर उत्सव मनाओ|*

**उत्सव पर्यन्त तुम करो गायन, संग वाद्ययंत्र अनंत कीर्तन |**
**सुनो धार्मिक उत्तम प्रवचन, हों जो पूर्ण यश गुरु भगवन || (२४७)**

*भावार्थ: उत्सव के समय वाद्ययंत्रों के साथ कीर्तन का गायन करो| गुरु एवं भगवान् के यश से ओत प्रोत उत्तम प्रवचन सुनो|*

**करो सदैव तुम भगवद पूजन, चैत्र शुक्ल नवमी राम जन्मदिन |**
**अष्टमी कृष्ण पक्ष माह श्रावन, लिए अवतार जिस दिन मोहन || (२४८)**

*भावार्थ: भगवान् श्री राम के जन्मदिन चैत्र शुक्लपक्ष नवमी एवं भगवान् श्री कृष्ण के अवतार दिवस अष्टमी कृष्णपक्ष श्रावन को इनका पूजन करना स्मरण रखें|*

**दिन महाशिवरात्री पावन, करो पूजन सती रविलोचन |**
**भाद्रपद शुक्ल तिथि चतुर्थन, करो पूज्य श्री गणपति अर्चन || (२४९)**

*भावार्थ: पावन महाशिवरात्रि पर्व पर माँ सती (पार्वती) एवं रविलोचन (भगवान् शिव) का पूजन करो| भाद्र महीने की शुक्लपक्ष चौथ (गणेश चतुर्थी) को प्रथम पूज्य गणेश की स्तुति करो|*

**माह आश्विन शुक्ल अमावस्य, करो तुम पूजन रुद्रवीर्य |**
**करो आराधना विग्रह दिव्य, जा मंदिर हिय श्रद्धा अराध्य || (२५०)**

*भावार्थ: असो मास (आश्विन महीने) की अमावस्या को हनुमान जी का तुम पूजन करो| हृदय में श्रद्धा के साथ मंदिर जाकर इन अराध्य दिव्य मूर्तियों को नमन करो|*

**हों हिय सदैव पञ्चदेव पावन, गणपति सूर्य उमा शिव अजन |**
**करो सदैव तुम इनका पूजन, दाता सुख भूतल निर्वान मरन || (२५१)**

*भावार्थ: अति पवित्र पञ्चदेव - गणपति, सूर्य, पार्वती, शंकर एवं विष्णु, को सदैव हृदय में धारण रखो | इनका सदैव पूजन करो| यह इहलोक में सुख एवं मरण पश्चात मोक्ष देते हैं|*

**हो हिय दृढ़ विश्वास गुरुवर, अक्षर पुरुषोत्तम मान्यवर |**
**नहीं करो तथापि अनादर, कभी कोई मूर्ति देव दिव्यकर || (२५२)**

*भावार्थ: गुरु महाराज श्री अक्षर पुरुषोत्तम में दृढ़ विश्वास रखो| लेकिन कभी किसी दिव्य मूर्ति का निरादर न करो|*

**नहीं करो कभी अवमानना, अन्य धर्म पंथ या अनुसरना |**
**हो हिय सदा आदर भावना, न करो तुम कभी आलोचना || (२५३)**

*भावार्थ: अन्य धर्म, सम्प्रदाय अथवा (उनके) पालन करने वाले की कभी अवमानना नहीं करो| हृदय में (उनके प्रति) आदर भाव रखो एवं कभी उनकी आलोचना नहीं करो|*

**नहीं करो तुम कभी अनादर, मंदिर धर्म-ग्रन्थ और संतवर |**
**करो सदा सत्संगी आदर, अनुरूप उचित जो हो प्रज्ञभद्र || (२५४)**

*भावार्थ: तुम कभी मंदिर, धार्मिक ग्रन्थ, संतों का अनादर नहीं करो| बुद्धिमत महापुरुषों का हे सत्संगी, जो उनके अनुरूप उचित हो, सदैव आदर करो|*

**लो जो भी व्रत तुम हे उन्नायक, आत्मसंयम लंघन परिष्कृत |**
**हो भक्ति हरि तुम्हरे आतंरिक, लक्ष्य करें प्रसन्न श्री अंतक || (२५५)**

*भावार्थ: हे भक्त, जभी भी कोई व्रत आत्मसंयम, उपवास अथवा शुद्धिकरण के लिए लो, तब हृदय में हरि के प्रति भक्ति हो और लक्ष्य प्रभु को प्रसन्न करना हो|*

**करो सदा एकादशी उपोषन, धार हृदय भक्ति नारायन |**
**नहीं करो कभी निषिद्ध भोजन, करो सदा विधि शास्त्र पालन || (२५६)**

*भावार्थ: हृदय में प्रभु के प्रति भक्ति रखकर एकादशी का उपवास करो| शास्त्रों के नियमों का पालन करते हुए (इस दिन) वर्जित भोजन नहीं करो|*

**जब तुम करो कोई उपवास, नहीं सोयो दिन करो प्रयास |**
**है दिन निद्रा कारण विनाश, हों नहीं फलित शुभ गुण उपास || (२५७)**

*भावार्थ: जब उपवास करो, तो दिन में सोने के त्याग का प्रयास करो| दिन में सोना व्रत से प्राप्त होने वाले शुभ गुणों के फलों का विनाश करता है|*

**हो यदि तीर्थ गमन की इच्छा, किए जो स्थल पावन सुभेक्षा |**
**जाएं धर भाव हिय शुभेच्छा, करेंगे नारायण पूर्णेच्छा || (२५८)**

*भावार्थ: भगवान् द्वारा पवित्र किए तीर्थ जाने की यदि इच्छा हो तो हृदय में शुभ भाव से जाएं| (भगवान्) स्वामीनारायण इच्छाओं को पूर्ण करेंगे|*

**धाम गुरुवर अक्षर दिव्यात्मा, करो दर्शन नित्य परमात्मा |**
**धार हृदय भाव निष्कामा, हो जैसी सामर्थ्य बुद्धिमा || (२५९)**

*भावार्थ: धर्मात्मा गुरु श्री अक्षर परब्रह्म के धाम का अपनी सामर्थ्य के अनुसार हे बुद्धिमान प्राणी, पूर्ण निष्काम भाव से नियमित रूप से दर्शन करें|*

**जाओ तुम काशी केदारनाथ, अयोध्या मथुरा बद्रीनाथ |**
**रामेश्वरम समान धाम नाथ, अनुरूप लगन श्री लोकनाथ || (२६०)**

*भावार्थ: प्रभु में श्रद्धा अनुसार काशी, केदारनाथ, अयोध्या, मथुरा, बद्रीनाथ, रामेश्वरम आदि भगवान् के तीर्थ धामों का भ्रमण करो|*

**जब जाओ तुम मंदिर दर्शन, करो सदा धर्म विधि अनुसरन |**
**नहीं छुएं मनुष मानिषी तन, नारी नहीं छुएं तन सज्जन || (२६१)**

*भावार्थ: जब मंदिर (प्रभु) दर्शन हेतु जाओ, तब धर्म नियमों का पालन करो| पुरुष नारी के शरीर को और नारी पुरुष के शरीर का स्पर्श न करें|*

**हो मनुष मानिषी सदैव स्मरन, जब जाओ मंदिर हरि दर्शन |**
**करो वस्त्र उचित तुम धारन, जो नियत नियम सत्संग पावन || (२६२)**

*भावार्थ: हे नर और नारी, यह स्मरण रखो कि जब तुम मंदिर प्रभु के दर्शन हेतु जाओ, तो वेश भूषा उचित स्थान में पवित्र सत्संग के निर्धारित नियमों के अनुसार हो|*

**रखो तुम हृदय सदैव यह ध्यान, है वांछित दान गुरु भगवान् |**
**न जाओ कभी रिक्त कर-तलान, गंडमंडलन हेतु दर्शन अव्यान || (२६३)**

*भावार्थ: हृदय में इसका सदैव ध्यान रखो कि हरि एवं गुरु को अर्पण करना आवश्यक है| जब मंदिर में हरि दर्शन हेतु जाओ, तो शून्य (खाली) हाथ नहीं जाओ|*

**हो काल सूर्य या चंद्र ग्रहन, करो त्याग सब कर्म नैत्यन |**
**करो निरंतर तुम हरि कीर्तन, करो त्याग निद्रा और भोजन || (२६४)**

*भावार्थ: सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण के समय सभी दैनिक कार्यों को त्याग दो| निद्रा एवं भोजन का त्यागकर प्रभु का निरंतर भजन करते रहो|*

**जब तक न हो जाए अंत ग्रहन, रहो आसीन तुम स्थल एकन |**
**गाओ सतत भजन तुम भगवन, रहो सलंग्न कर्म तुम पावन || (२६५)**

*भावार्थ: जब तक ग्रहण का अंत नहीं हो, तब तक एक स्थान पर बैठो| निरंतर हरि के भजन गाओ एवं पुण्य कर्म करो|*

**जब हो जाए समाप्त ग्रहन, करो स्नान धोवन आच्छादन |**
**करें तब योगी यज्ञ सम्पादन, दें गृहस्थ दान अक्षम निर्धन || (२६६)**

*भावार्थ: ग्रहण के अंत होने पर स्नान करें, वस्त्रों को धोएं| योगी (साधू, संत) यज्ञ पूर्ण करें एवं गृहस्थी दिव्यांगों एवं निर्धनों को दान दें|*

**करो पालन तुम नियम श्रुति, काल जन्म मृत्यु श्राद्ध कृति |**
**देंगे यह कार्य ऐहिक शान्ति, बाद मरण हो जीवन मुक्ति || (२६७)**

*भावार्थ: जन्म, मृत्यु, श्राद्ध (आदि) कर्मों में धार्मिक नियमों का पालन करो| सत्संगी, (इससे) इहलोक में सुख शान्ति एवं मरण पश्चात मोक्ष प्राप्त होता है|*

**हो जाए व्यव्यहार अनैतिक, करो तुम प्रायश्चित साधक |**
**भगवद नाम बचाए पातक, करो निरंतर भजन तुम अन्तक || (२६८)**

*भावार्थ: यदि कोई अनैतिक व्यवहार हो जाए तो हे साधक, तुम उसके लिए प्रायश्चित करो| प्रभु का नाम ही पापी को बचाने वाला है| प्रभु का निरंतर भजन करो|*

**जो नियम नियत हैं आपात काल, करो प्रयोग संकट दुष्काल |**
**आए यदि जीवन अल्प जंजाल, नहीं त्यागो तुम धर्म सुचाल || (२६९)**

*भावार्थ: आपात काल के लिए निर्धारित नियमों का प्रयोग संकट में बुरे समय में ही करो| यदि छोटी कठिनाईयां आएं तो धर्म एवं सदाचार का त्याग नहीं करो|*

**हों पीड़ादायक दुःखद क्लेश, करो तुम स्मरण भगवन विघ्नेश |**
**काटें कष्ट दें बल श्री अघेश, करो स्व-रक्षा औ वंश परिवेश || (२७०)**

*भावार्थ: जब दुःखदायी संकट पीड़ा दें, तो विघ्नहर्ता भगवान् को स्मरण करो| तुम्हें शक्ति मिलेगी और कठिनतम कष्ट कट जाएंगे| (इस बुरे समय में) अपनी एवं अपने परिवेश में रहने वाले वंशजों की रक्षा करो|*

**हो यदि सामना स्थिति अहम, हो संभावना मरण अवश्यम |**
**करो ध्यान गुरुवर पाठनम, बचेंगे प्राण गुरु के आशीषम || (२७१)**

*भावार्थ: यदि कठिन स्थिति का सामना हो जहां मृत्यु की संभावना हो, तब गुरु की शिक्षा का ध्यान करो| गुरु के आशीर्वाद से प्राण बचेंगे|*

**अनुसार स्थल काल क्षमता, करो कृत्य सत्संगी शुभता |**
**हो संलग्न चरित्र पवित्रता, हों जो उचित सत्संग श्रेष्ठ्ता || (२७२)**

*भावार्थ: स्थान, समय एवं (अपनी) क्षमता के अनुसार, सत्संगी, शुभ कार्य करो| जो श्रेष्ठ सत्संग के उचित हों उन सम्मानित आचरण में संलग्न हो|*

**करो पालन गुरुवर आदेश, करो अनुसरण श्रुति निर्देश |**
**करो तुम हृदय धारण सर्वेश, करेंगे कृपा गुरु और भुवनेश || (२७३)**

*भावार्थ: गुरुदेव की आज्ञा का पालन करो| श्रुति (धार्मिक ग्रंथों) का अनुसरण करो| हृदय में भगवान् को धारण करो| गुरुदेव और भगवान् कृपा करेंगे|*

**उठाओ तुम उच्च व्यक्तित्व, गुणवत्ता माध्यम धर्म तत्व |**
**करो प्रोत्साहित तुम व्यश्व, कर सकें वह अनुसरण नेक सत्व || (२७४)**

*भावार्थ: धर्म सार के माध्यम से अपने व्यक्तित्व की गुणवत्ता में वृद्धि करें| संसार (सभी प्राणियों ) को सदाचार का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करें|*

**न हो भयभीत दुष्ट आत्मा, भूत प्रेत पिशाच समात्मा |**
**करो त्याग तुम वित्ति निष्कर्मा, होगे सुखी सजीव बुद्धिमा || (२७५)**

*भावार्थ: भूत, प्रेत, पिशाच समान आत्मा, जो दुष्ट आत्मा हैं, उनसे भयभीत नहीं हो| ऐसे निष्कर्म (जिनका कोई अस्तित्व न हो) विचार त्याग दो और हे बुद्धिमान (प्राणी), आजीवन आनंदमय रहो|*

**सुनें सहजानंद नामावली, समझें महत्व ग्रन्थ यह आली |**
**समय हो दारुण या खुशाली, दे शान्ति करे हृदय मदाली || (२७६)**

*भावार्थ: इस उच्च ग्रन्थ का महत्व समझते हुए 'सहजानंद नामावली' का मंगल अथवा अमंगल समय पर सुनना हृदय में प्रसन्नता देता है|*

**हों हृदय सदैव यह मेरे वचन, नहीं देंगे कष्ट कभी भक्तन |**
**काल कर्म माया व् दुर्गुन, लोगे जब तुम शरन पग संतन || (२७७)**

*भावार्थ: इन मेरे वचनों को ह्रदय में रखो| हे भक्त, काल, कर्म, माया जैसे लक्षण (दुर्गुण) तुम्हें कष्ट नहीं देंगे जब तुम संतो के चरणों की शरण लोगे (अर्थात सत्संग करोगे)|*

**करो त्याग तुम हे श्रेष्ठजन, आसक्ति अंधश्रद्धा व्यसन |**
**हैं यह सब दुःखदायी कर्मन, रखें दूर कृपा सों भगवन || (२७८)**

*भावार्थ:: हे श्रेष्ठ प्राणी (सत्संगी), तुम आसक्ति, अंधविश्वास एवं व्यसन का त्याग करो| यह दुःखदायी कर्म प्रभु की कृपा से दूर रखते हैं|*

**नहीं हैं कर्ता काल और कर्म, रखो तुम यह विश्वास स्वयम |**
**मानो सत्य अक्षर पुरुषोत्तम, हैं वही कर्ता तुम्हारे कर्म || (२७९)**

*भावार्थ: काल और कर्म कर्ता नहीं हैं, ऐसा स्वयं में विश्वास रखो| अक्षर पुरुषोत्तम ही सत्य हैं, उन्हें ही अपने कर्मों का कर्ता मानो|*

**यदि आए कदाचित बुरा समय, रखो धैर्य और विश्वास अनय |**
**हों अक्षर पुरुषोत्तम ह्रदय, नहीं रहे सदा समय कष्टमय || (२८०)**

*भावार्थ: यदि कभी बुरा समय आए तो प्रभु में विश्वास और धैर्य रखो| अक्षर पुरुषोत्तम ह्रदय में रखो| कष्टमय (बुरा) समय सदैव के लिए नहीं रहता|*

**इच्छा स्वीकारें ब्रह्म आचार, बनें साधु त्यागें संसार |**
**अक्षरब्रह्म श्री धर्मावतार, लें दीक्षा अष्टांगिक आचार || (२८१)**

*भावार्थ: यदि संसार त्याग कर साधु आश्रम में ब्रह्माचार अनुसरण की इच्छा हो (ब्रह्मचारी बनना हो) तो धर्मावतार गुरु अक्षरब्रह्म से अष्टांगिक आचार की दीक्षा लें|*

**ली यदि दीक्षा साधु वर्ग की, करो न इच्छा धन धान्य की |**
**न हो पास मुद्रा राष्ट्र की, न करो तुम स्पर्श रूपिकी || (२८२)**

*भावार्थ: यदि साधु (आश्रम) की दीक्षा ली है तो धन-धान्य की इच्छा नहीं करो| राष्ट्रीय मुद्रा (रुपये पैसे आदि) पास नहीं होनी चाहिए| सिक्कों का स्पर्श भी न करो|*

**करो तुम वृद्धि प्रेम भगवान्, अक्षर पुरुषोत्तम गुरु महान |**
**करो ग्रहण मत गुण निर्मान, निष्काम निर्लोभ विमुखान || (२८३)**

*भावार्थ: भगवान् और महान गुरु अक्षर पुरुषोत्तम में प्रेम वृद्धि करो| इस हेतु निष्काम, निर्लोभ, निःस्नेह (इत्यादि) गुणों के सिद्धांतों को ग्रहण करो|*

**है नितांत हों साधु निःस्वादी, हों तपस सदैव निर्विवादी |**
**संभव रहें वह दूर आबादी, रहें लीन मनन हरि अत्यादी || (२८४)**

*भावार्थ: साधु निःस्वादी हों, यह आवश्यक है| सन्यासी को सदैव निर्विवादी होना चाहिए| यदि संभव हो तो नगर से दूर महान प्रभु की साधना में लीन रहें|*

**करें आत्मा तादाम्य ब्रह्म, करें अर्पित स्वामीनारायनम |**
**हो दिव्यभाव हृदय अन्त्रम्, हों एकाकार प्रभु अच्युतम || (२८५)**

*भावार्थ: अपनी आत्मा का ब्रह्म से तादाम्य करें (ब्रह्म तुल्य बनें)| स्वयं को स्वामीनारायण को अर्पित करें| हृदय के अंदर दिव्यभाव से प्रभु अच्युतम से एकाकार हो जाएं|*

**यदि साधु हो आत्मोत्सर्गी, भक्तिभाव सों संत सत्संगी |**
**हो इच्छा हृदय सम उत्सर्गी, मार्ग अक्षर पुरुषोत्तम सर्गी || (२८६)**

*भावार्थ: साधु आत्म-बलिदानी बनें| भक्तिभाव से संतों का सत्संग करें| हृदय में निवृति की इच्छा रखें| अक्षर पुरुषोत्तम को प्राप्त करने का (यह) मूल मार्ग है|*

**सिद्धांत आगना उपासन, समझो हितकारी साधु संतन |**
**हों दूर दुर्गति अभ्यासन, हो हिय हर्षित करें जब साधन || (२८७)**

*भावार्थ: आगना एवं उपासना सिद्धांत साधु संतों के लिए अत्यंत हितकारी हैं| (इनके) अभ्यास करने से दुर्गति दूर होती है| साधन करने से हृदय हर्षित होता है|*

**करो अनुसरण अपना जीवन, आगना उपासना आचरन |**
**हों गुरु अक्षर ब्रह्म प्रसन्न, हो तुम कृपा पात्र नारायन || (२८८)**

*भावार्थ: जो जीवन में आगना एवं उपासना सदाचार का पालन करते हैं, भगवान् उनसे प्रसन्न होते हैं| वह प्रभु के कृपा पात्र बनते हैं|*

**पाओगे तुम स्थिति ब्राह्मिक, वर्णित जैसी ग्रन्थ आत्मिक |**
**पाकर प्रभुत्व धर्म एकांतिक, हों अधिकारी मोक्ष अन्तक || (२८९)**

*भावार्थ: जैसा (धार्मिक) ग्रंथों में वर्णित है, उन्हें ब्राह्मिक स्तिथि की प्राप्ति होती है| एकांतिक धर्म में निपुणता प्राप्त कर वह मृत्यु पर मोक्ष के अधिकारी होते हैं|*

**पाएं शाश्वत हरि दिव्यता, हों प्रसन्न दें हरि अमनता |**
**इहलोक सुख भौतिकता, मरण पाएं लोक भगवंता || (२९०)**

*भावार्थ: (उन्हें) प्रभु की अमिट दिव्यता प्राप्त होती है| प्रभु प्रसन्न हो उन्हें भूलोक (जीवित अवस्था) में शांति एवं भौतिक सुख प्रदान करते हैं एवं मरण पश्चात अपने लोक में वास देते हैं|*

**हो जाते जब नर नारि ऐक्य, श्री अक्षरब्रह्म पावन दिव्य |**
**हों अर्पित लगन नम्र अनन्य, यही मुक्ति कहें संत हरिप्रिय || (२९१)**

*भावार्थ: जब तुम पवित्र दिव्य श्री अक्षरब्रह्म से एकीकार हो जाओ, अपनी एकनिष्ठ भक्ति विनम्रता से (उन्हें) अर्पित कर दो, इसी को हरि-भक्त संत मुक्ति कहते हैं|*

**कहें संत सार अग्नि पूजन, जो वर्णित आगना उपासन |**
**करो प्राप्त विस्तृत बोधन, माध्यम ग्रंथ धार्मिक पठन || (२९२)**

*भावार्थ: संत कहते हैं कि यही तथ्य अग्नि पूजन का है, जो आगना उपासना में वर्णित है| इसका विस्तृत ज्ञान धार्मिक ग्रंथों के पठन से प्राप्त किया जा सकता है|*

**करो तुम 'सत्संग दीक्षा' पठन, धर एकाग्र ह्रदय नारायन |**
**किसी कारण असमर्थ पठन, करो सप्रेम तुम ग्रन्थ श्रवन || (२९३)**

*भावार्थ: ह्रदय को (भगवान्) नारायण पर केंद्रित कर प्रतिदिन 'सत्संग दीक्षा' पढ़ो| यदि पढ़ने में असमर्थता हो, तो इसे प्रेम से सुनो|*

**करें प्रयास सभी भक्तजन, निष्ठावत गुरु और भगवन |**
**करें ग्रन्थ सत पठन श्रवन, समझें सार उतारें जीवन || (२९४)**

*भावार्थ: सभी प्राणी गुरु एवं भगवान् के प्रति श्रद्धा रखते हुए इस पुण्य ग्रन्थ का पठन एवं श्रवन करें| इस के सार को समझ (इसकी शिक्षाओं को) इसे अपने जीवन में उतारें|*

**सिद्धांत अक्षर पुरुषोत्तम, किए स्थापित भगवन अच्युतम |**
**हुए अवतरित भू श्री विषम, रूप स्वामीनारायण ब्रह्म || (२९५)**

*भावार्थ: अक्षर पुरुषोत्तम सिद्धांत श्री नारायण ने स्थापित किए| नारायण ही ब्रह्म स्वामीनारायण के रूप में अवतरित हुए|*

**किए सिद्धांत पावन प्रसार, गुणातीत गुरु सब संसार |**
**सत्संग दीक्षा धर्मानुसार, रचे श्री महंत मूलानुसार || (२९६)**

*भावार्थ: इस पावन सिद्धांत का गुणातीत (सत्व रज तम से परे, अलिप्त) गुरुओं ने समस्त संसार में प्रसार किया| धर्मानुसार इसका तत्व लेते हुए (परम पावन प्रगट स्वरुप) श्री महंत स्वामी (जी) ने सत्संग दीक्षा की रचना की|*

**कर सकें प्रदान मुमुक्षु निर्वान, हुए भूथल अवतरित भगवान् |**
**है रूप परब्रह्म दयावान, स्वामीनारायण कृपावान || (२९७)**

*भावार्थ: मुमुक्षुओं को मोक्ष प्रदान करने के लिए परब्रह्म दयावान भगवान् स्वामीनारायण रूप में प्रभु भूमि पर अवतरित हुए|*

**लो हे भक्त शरण अर्चिष्मान, हेतु सफलता और कल्यान |**
**होगा मंगल अमित विश्वान, मृत्यु उपरान्त पाएं निर्वान || (२९८)**

*भावार्थ: सफलता एवं कल्याण के लिए हे भक्त, प्रभु की शरण लो| (प्रभु की शरण में जाने पर) इहलोक में अति मंगल होगा एवं मरण उपरान्त मोक्ष की प्राप्ति होगी|*

**करें प्रार्थना हम अमृतय, दें आशीष परब्रह्म अतुल्य |**
**स्वामीनारायण हरि दिव्य, करो कृपा सब भूमाण्डल्य || (२९९)**

*भावार्थ: हम परब्रह्म भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वह आशीष दें| हे दिव्य (भगवान) स्वामीनारायण, इस भू मंडल पर सब पर कृपा करो|*

**करें संहार स्वामीनारायन, सभी शोक त्रि-क्लेश व्यसन |**
**तनाव अज्ञानता वितर्कन, भय आदि सभी लौकिक दुःखन || (३००)**

*भावार्थ: (भगवान्) स्वामीनारायण शोक, त्रि-क्लेश, व्यसन, तनाव, अज्ञानता, संदेह, भय आदि सभी दुःखों को नष्ट करें|*

**करें कृपा स्वामीनारायन, दें आशीष गुरु समस्त भूजन |**
**हो हिय परम शांत प्रसन्न, हो तन आरोगी मोक्ष मरन || (३०१)**

*भावार्थ: श्री स्वामीनारायन (भगवान्) कृपा करें| समस्त पृथ्वीवासीओं को गुरुदेव आशीर्वाद दें| हृदय में परम शांति और प्रसन्नता हो| शरीर स्वस्थ्य रहे| मरण पश्चात मोक्ष की प्राप्ति हो|*

**नहीं करे कभी कोई हिंसा, नहीं करें जन द्वेष अन्य मनुषा |**
**सब प्रति सम्मान हिय एकसा, करें प्रेम प्राणी सम अनिशा || (३०२)**

*भावार्थ: कभी कोई हिंसा नहीं हो| कोई प्राणी दूसरे से घृणा न करे| सब एक दूसरे का सम्मान करें| सब प्राणियों के प्रति प्रेम अंतरंग मित्र समान हो|*

**हो अटल प्रेम भक्ति भुवनेशा, हो अविचल श्रद्धा हरि देवेशा |**
**बढ़े हृदय सदैव समाश्वसा, अक्षर पुरुषोत्तम पूज्यसा || (३०३)**

*भावार्थ: प्रभु में अटल प्रेम, भक्ति, आस्था एवं अविचल श्रध्दा हो| पूज्यनीय अक्षर पुरुषोत्तम के प्रति हृदय में सदैव विश्वास बढ़े|*

**हों कृतसंकल्प सभी सत भक्त, हों पालक धर्म समान संत |**
**पाएं कृपा सब धर्मोन्मत्त, श्री सहजानन्द रूप भगवत || (३०४)**

*भावार्थ: सब पवित्र भक्त यह संकल्प लें कि वह संत अनुरूप धर्म का पालन करेंगे| सभी धर्मी श्री परम ब्रह्म (परमात्मा) सहजानन्द की कृपा प्राप्त करें|*

**हों समस्त भूजन समर्पित, शान्ति न्याय आत्मिक-शक्ति |**
**चलें सभी धर्म मार्ग सत्यति, पाएं कृपा गुरु व् समूर्ति || (३०५)**

*भावार्थ: सभी प्राणी शान्ति, न्याय एवं आत्मिक बल के प्रति समर्पित हों| सभी सत्य धर्म मार्ग पर चलें| गुरु और साकार (हरि) की कृपा प्राप्त करें|*

**हो मध्य भूजन आपसी एकता, सुहृद्भाव स्नेह व् सख्यता |**
**संवेदना और सहनशीलता, होंगे तब प्रसन्न भगवन्ता || (३०६)**

*भावार्थ: आपसी एकता, सुहृद्भाव, प्रेम, मित्रता, संवेदना एवं सहनशीलता की सदा वृद्धि हो। तब श्री हरि प्रसन्न होंगे।*

**करें सब संसर्ग दिव्य परब्रह्म, सच्चिदानंद श्री भगवन ब्रह्म |**
**हों उद्भव निर्दोष सत भावम, दिव्यभाव सत्संग अभिमुखम || (३०७)**

*भावार्थ: दिव्य परब्रह्म सच्चिदानंद भगवन ब्रह्म का संसर्ग करें। सत्संग के प्रति निर्दोषभाव एवं दिव्यभाव उत्पन्न हों।*

**समझें सदा अभिन्न स्व-आत्मा, अक्षररूप पावन परमात्मा |**
**करें भक्ति अर्पण दिव्यात्मा, श्री सहजानन्द पुरुषोत्मा || (३०८)**

*भावार्थ: सदा अपनी आत्मा को पवित्र परमात्मा अक्षर रूप समझें। सदैव दिव्यात्मा श्री सहजानन्द पुरुषोत्तम को भक्ति अर्पण करें।*

**पूज्य स्वामी श्री महंत परम, किए प्रारम्भ लेखन यह ग्रन्थम |**
**मासक माघ शुक्ल तिथि पंचम, द्विसहस्त्रषट्सप्तति विक्रम || (३०९)**

*भावार्थ: परम पूज्य स्वामी महंत (जी) ने इस ग्रन्थ लिखने का प्रारम्भ विक्रम (सम्वत) २०७६ के माघ मास की शुक्ल पंचमी को प्रारम्भ किया।*

**किए पूरित ग्रन्थ स्वामी, दिवस चैत्र माह शुक्ल नवमी |**
**था उत्सव जन्मदिन निष्कामी, स्वामीनारायण अन्तर्यामी || (३१०)**

*भावार्थ: स्वामी जी ने इस ग्रन्थ को चैत्र मास की शुक्लपक्ष नवमी को पूर्ण किया। यह दिन निष्कामी स्वामीनारायण भगवान् का जन्मदिन उत्सव था।*

**था जन्मशताब्दी उत्सव दिन, महाराज प्रमुख गुरु पावन |**
**किए महंत ग्रन्थ लोकारपन, भक्ति आमोद प्रेम उनके मन || (३११)**

*भावार्थ: पावन गुरु प्रमुख स्वामी जी के जन्मशताब्दी उत्सव काल में आनंद, भक्ति, प्रेम और सहजता से महंत जी ने इस ग्रन्थ का लोकार्पण किया।*

**करो श्रद्धांजलि स्वीकार, परब्रह्म सहजानन्द साकार |**
**जो केन्द्र उपासना चक्रधार, अक्षर गुणातीतानन्द सार || (३१२)**

*भावार्थ: प्रभु सगुण परब्रह्म सहजानंद जो उपासना के केंद्र हैं, तथा मूल अक्षर गुणातीतानन्द श्रद्धांजलि स्वीकार करें।*

**बुद्धिमूर्त महाराज भगत, यग्रपुरुष श्री शास्त्री संत |**
**योगी महाराज रागवत्, हैं संरक्षक यह सिद्धांत सत || (३१३)**

*भावार्थ: बुद्धि अवतार (श्री) भगत जी महाराज एवं यग्रपुरुष संत (श्री) शास्त्री जी एवं सदा प्रिय (श्री) योगी जी महाराज यह सब सत्य सिद्धांत के संरक्षक हैं।*

**सुखद श्री अक्षरब्रह्म मूरत, स्वामी श्री प्रमुख विश्व पूजत |**
**जो हैं आदर्श नम्र दिव्य सत, करें सहस्त्र प्रणाम हम भक्त || (३१४)**

*भावार्थ: सुखद अक्षरब्रह्म मूर्ति विश्व में पूजित स्वामी प्रमुख जी महाराज जो सत्य एवं दिव्यता के आदर्श हैं, उन्हें हम भक्तगण सहस्त्रों नमन करते हैं।*

**करें विनय स्वामीनारायन, अक्षर पुरुषोत्तम परमात्मन |**
**करें प्रसार जग मत भावन, दिए जो तत्व अक्षरब्रह्म पावन || (३१५)**
*भावार्थ: हम अक्षर पुरुषोत्तम परमात्मा स्वामीनारायण से प्रार्थना करते हैं कि वह विश्व में पावन दिव्य अक्षर ब्रह्म के सुन्दर सिद्धांत का प्रसार करें।*

**परम पावन प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी जी महाराज द्वारा रचित 'सत्संग दीक्षा' पर आधारित 'सत्संग परायण हिंदी काव्य' का समापन हुआ। यह ग्रंथ स्वामी जी महाराज ने भगवान् स्वामीनारायण द्वारा दिए गए 'आगना एवं उपासना' के सिद्धांत को आधार मानकर रचा है। परम पावन**

**प्रगट ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी जी महाराज ने इसे अपनी हस्तलिपि में गुजराती भाषा में रचित किया जिसे संस्कृत में महामहोपाध्याय साधु श्री भद्रेश दास जी महाराज ने श्लोकबद्ध किया| इसके भावार्थ का हिंदी काव्यानुवाद डॉ यतेंद्र शर्मा, अध्यक्ष, श्री राम कथा संसथान, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया, ने किया|**

## कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा

एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि

रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधी विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

यह काव्य 'परम पावन श्री स्वामी प्रमुख जी महाराज मानस काव्य' परम पावन स्वामी श्री प्रमुख जी महाराज के प्रति कवि की श्रद्धांजलि है। परम पावन स्वामी महामहोपाध्याय वेदांत मार्तण्ड श्री भद्रेश दास जी महाराज के निर्देश पर इस काव्य की रचना की गई है। यह काव्य परम पावन श्री स्वामी प्रमुख जी महाराज के आध्यात्मकि जीवन के कुछ अंश से उद्धृत है।

**श्री राम कथा संस्थान पर्थ**
**३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५**
**Web https://shriramkatha.org**
**Email: srkperth@outlook.com**

# सौजन्य
# COURTESY

BAPS SWAMINARAYAN RESEARCH

3 Buckingham Drive,
Wangara, Perth, WA 6065
AUSTRALIA